श्री सीतारामाभ्यां नमः
जन्मोत्सव बधाई पदावली
राम राम
राम राम
गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुषमा कंद ।
हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर वृन्द ॥

आचार्य स्वामी श्री सीताराम शरण जी महाराज
लक्ष्मणकिलाधीश

।। श्री सीतारामाभ्यां नमः ।।

जन्मोत्सव बधाई पदावली

आचार्य पीठ श्री लक्ष्मण किला

श्री अयोध्या जी, फैजाबाद

- जन्मोत्सव बधाई पदावली
  श्रीराम नवमी वर्ष, 2010

- प्रति - 2000

- प्राप्ति स्थल :
  कार्यालय श्री लक्ष्मणकिला
  श्री अयोध्या, फैजाबाद
  मो. : 9415062831

- प्रकाशक :
  स्वामी सीतारामशरण सेवा संस्थान
  श्री हनुमान धाम, श्रीकृष्ण बलराम हॉल,
  आशियाना मेन रोड, पटना - 800025
  दूरभाष : 0612-3584648

- मूल्य : 30/- (तीस रुपये)

- मुद्रक : दीपक प्रेस, तारागंज पुल,
  लश्कर,ग्वालियर फोन : 0751-2438668

॥ श्री रसिकेन्द्र विहारिणे नमः ॥

भूमिका

श्री सीतारामचरणानुरागी श्रीवैष्णवों के लिए नाम–रूप–लीला और धाम का अहर्निश सेवन ही परमधर्म है। इष्ट के चरित्र का अनुस्मरण, उत्सव–समैया के माध्यम से प्रभु लीलाओं में प्रवेश की साधना आचार्यों की परम्परा रही है। इसी क्रम में उपासना निरत पूर्वाचार्यों ने प्रभु श्री राघवेन्द्र की जन्मलीला का दर्शन किया है और तत्सम्बन्धी विशिष्ट साहित्य की रचना की है। पूज्यपाद गोस्वामी जी महाराज, श्रीकृपानिवास जी, स्वामी श्री करुणा सिन्धु जी महाराज, श्री युगलप्रिया जी महाराज, पूज्य स्वामी श्री यगुलान्यशरण जी महाराज, पं. श्री जानकीवरशरण जी महाराज तथा श्री सियाअलीजी प्रभृति अनेक भावुक संत इस रीति से उपासना करते रहे हैं। पूज्य आचार्यों की यह महावाणी वैष्णव सम्प्रदाय की महत्तर सम्पत्ति है। साधक इन पदों का गान करते हुए भाव–समाधि द्वारा अपने देश–काल को विस्मृत कर प्रभु–सन्निधि के आस्वाद में डूबे रहते हैं। जन्मोत्सव बधाई के पदों का गान करते हुए मन्दिरों में जन्म महोत्सव सम्पन्न होता है। श्रीराम जी, श्री किशोरी, श्री हनुमान जी व अन्य पूवाचार्यों की बधाई युक्त यह पदावली पूर्वकाल से ही प्रकाशित होती आ रही है। इसी का यह नया संस्करण है। अनुरागीजन इससे पदों का गान करते हुए प्रभु जन्मोत्सव के उस आनन्द–सरोवर में निमज्जन कर सकेंगे जिसकी फलश्रुति बताते हुए श्री गोस्वामीपाद ने कहा है –

भरत राम रिपुदवन लखन के चरित सहित अन्हवैया।
'तुलसी' तब के से अजहुँ ज़ानिबे रघुबर नगर बसैया॥

इस संस्करण के प्रकाशन में जिनका श्रम–सहयोग सन्निहित है। उन सभी के लिए मंगलकामन ।

श्री रामनवमी 2010 **– मैथिलीरमण शरण**

सिय पिय जू की प्राण बल्लभा, रंग महल नित बास।। 3
अभय प्रदान देत रसिकन को, आनन्द-सिन्धु विलास।। 4

पद - 9

करु मन चारुशिला पद ध्यान।।
अति मनहरन सरन सुखदायक, जावक युत छवि खान।। 1
अरुण कमल सो कोमल पगतल, नखदुति मोहत भान।। 2
भूषण मधुर कनकमणि सोभित, रसिकन मन सुखदान।। 3
जब इनके शरणागत होवे, तब सिय जू पहिचान।। 4
टहल महल की सब विधि पावै, बाजै अभय निसान।। 5
अली विहारिणि जीवन धन मम, प्राननहूँ के प्रान।। 6

रेखता पद - 10

अब मोहि चारुशिला जु की आसा।
प्रिय प्यारी जु की प्राण वल्लभा, रसिक जनन सुखरासा।। 1
विभचारी मत फन्द नसावन, रसिक अनन्य सुपासा।। 2
युगल परिकरेश्वरी कृपा से, रंग महल नित बासा।। 3
अली विहारिनि की आचारज, दीन्हों युगल विलासा।। 4

पद - 11

बधाई बाजै हो मनहरनी।
मिथिलापुर में मंगल घर-घर, सुख शोभा को बरनी।। 1
लघु भ्राता श्री मिथिलापति के, शत्रुजीत सुठि करनी।। 2

सम कुल रूप सकल गुन की निधि, चन्द्रकान्ति तेहिं घरनी ।। 3

ताकी कोख प्रगट कन्या भइ, छवि शोभा की धरनी ।। 4

जनकललीजू की सुख द्रुम लतिका, नाना मुद फर फरनी ।। 5

रसिका लघु भगिनी है ताकी, सिय पदरज अनुसरणी ।। 6

पद - 12

सहेली आनन्द मंगल आज।

बरस गाँठ श्री चारुशिला जु की, घर-घर मंगल साज ।। 1

चौके चारु कलश ध्वज चामर, पूरन घट मधिराज ।। 2

नाचत गावत मुद उपजावत, जुरि-जुरि सखिन समाज ।। 3

रसिका के उर अधिक भयो सुख नातो नेह निवाज ।। 4

पद - 13

चली गज गामिनी सज के। नगारे नौबतें बज के ।। 1

लिये दधि दूब गोरोचन। सुमुखि राजीव नवलोचन ।। 2

करैं कलगान पिक बैनी। झरैं सुर सुमन की श्रेनी ।। 3

जन्म श्री चारुशीला को। हेतु रसराज लीला को ।। 4

मुदित मन शत्रुजित महाराज। देवैं मुकुतामनी गजबाज ।। 5

बधाई बज रही घनघोर। उमग आनंद महलन दौर ।। 6

श्री मिथिलेश जू आये। लली मुख जोहि सुख पाये ।। 7

लुटाये लाल अनमोले। बड़े बड़ मोल बिन तोले ।। 8

'सियासखि' हर्ष लखि पायो। सोई रसना सरस गायो ।। 9

श्री सरयू जी की बधाई

पद – 1

आजु शुभ जन्म श्री मानसर नन्दिनी।

तांडव नृत्य जब कियो शंकर परम प्रेम दृग,

राम सु प्रवाह सुख कन्दिनी ।। 1

ब्रह्म ढिग पेखि सु कमण्डलासीन करि बहुरि,

निज मानसहिं राखि सुर बन्दिनी ।। 2

बीते बहु काल सु भुवाल इक्ष्वाकु भो,

विनय, सु वशिष्ठ करि लाय विधि अन्दिनी ।। 3

ज्येष्ठ शित पूर्णिमा सुखद संध्या समय,

अवध उत्तर मिलि महा अभिनन्दिनी ।। 4

भयो मनु नृपति दसरथ ता तनय प्रभु,

राम सीता प्रिया सुजन मुद कन्दिनी ।। 5

चल्यो पूजन करन युगल परिकर सहित,

राम रघुनन्द अरु जनक नृप नन्दिनी ।। 6

पूजि पुनि सीय सु सुहागवर बाग मधि,

सुमन बँगले सु बिच रचे स्वपसन्दिनी ।। 7

युगल सु विहारिनी सु गुरु करुना कलित,

ललित प्रिय बेलि रसकेलि सु फलन्दिनी ।। 8

पद – 2

बधाई सुर बधू गाई। सरयू सरि जन्म सुखदाई।।
प्रगट भई राम दृग माई। सुमन बहु देव झरि लाई।।
अप्सरा नृत्य गुन गाई। सरस सुर तान मन भाई।।
अमर शिव प्रेम से गाई। डमरु ध्वनि वेद छवि छाई।।
शरण तव दास बलि जाई। दरस सुख नयन सरसाई।। 1

पद – 3

सरयू सरि वेद बुध बरनी। भई जग आय पतित तरनी।।
सुन्दरि छवि प्रेम सुधा धरनी। नयन जल देव मुदित करनी।।
अखिल अघ आप भई उरनी। जपत सियाराम भुवन भरनी।।
भई कलिकाल रुज जरनी। परन तब दास सरयू शरनी।। 2

पद – 4

चली सरि देव ध्वनि धारा। नयन अमृत राम सुख सारा।।
वशिष्ठी मानसी कारा। कियो मुनि प्रेम उपकारा।।
कोलाहल पंथ में न्यारा। दास नर नारि अघ जारा।।
भँवर बहु रँग सलिल गहरा। सुखी तब जीव लखि लहरा।।

पद – 5

बधाई आज छवि छाई। सरयू सरि जन्म सुखदाई।।
प्रगटि प्रभु नयन ते माई। बरषि सुर सुमन झरि लाई।।

कहैं सब जयति हरषाई। बाजै दुन्दुभी मन भाई।।
सुता मुनिवर अवध आई। शरण तब दास बलि जाई।।
दरश सुख नयन सरसायी।।

पद – 6

बधाई बाज रही मनभाई।
मानस नन्दिनि प्रगट भई हैं, अवध पुरी में आई।। 1
श्री वशिष्ठ के भवन मनोहर, राग तान रह्यो छाई।। 2
नभ विमान सुर थकित रहे हैं, सुमन माल बरसाई।। 3
मुनि पत्नी नेवछावरि देहीं, जाचक जनहिं बोलाई।। 4
प्रेम मोद सियपिय जस निजमुख, करत सु उमगि बड़ाई।। 5

श्री सरयू स्तव पद – 7

जय जय वाशिष्ठी, हरिहर इष्टी, त्रिभुवन सृष्टी वैतरनी।
रसिकन सन्तुष्टी, हृष्टी पुष्टी, हरित अनिष्टी मुद भरनी।।
जय मानस नन्दिनि, कलुष निकन्दिनि, जगत सुवन्दिनि छर छरनी।
परतम सुख कन्दिनि, परमानन्दिनि, चरित सुछन्दिनि नित करनी।
परब्रह्म अनुज्या, रघुकुल पूज्या, देति सयुज्या, श्रुति वरनी।
रस रास विलासिनि, अज अविनासिनि, प्रेम प्रकासिनि, तम हरनी।।
प्रागादिक कासी, तब तट वासी, पद रज दासी अभिलाषी।
काटत जम फाँसी, संसृति नासी, छमति छमा सी वसुधा सी।।
अक्षय रति खानी, अभिमतदानी सारँग पानी सुख लहहीं।
ध्यावत मुनि ज्ञानी, तन मन बानी, तजि कुलकानी, नत चहहीं।।

'''मधुरी' गुन गावै, पर पद पावै, अनत न जावै नित नेरी।
सियाराम सुशरनै, सुजस सुबरनै, देहु सुचरनै लखि चेरी।।

पद – 8

मानस नन्दिनि बरस गाँठ सुनि, आनन्द अवधि सुछाई।
नवल नगर घर डगर बगर में, दर–दर बजत बधाई।।

तोरन केतु चौक घट चामर, मंगल साज सजाई।
पूग रसाल सफल तरु कदली द्वारन द्वार सुहाई।।

सुर किन्नर गन्धर्व वधू मिलि गावैं नचि हरषाई।
विप्र वेद धुनि करैं भरैं मुद, वन्दी विरद सुनाई।।

दीन पतित उद्धार हेतु जग, मुनि वशिष्ठ प्रगटाई।
विविध दान सनमान याचकन, देत सिया रघुराई।।

महामोद उत्साह उमड़ि निधि, तृन तरु शोक बहाई।
''मधुरी'' सरयू सुजस सोहिलो, गावत सुख न समाई।।

पद – 9

जेठ पूर्णिमा मंजु महा सुखदाई हो।
ललना, मानस दुहिता जनम जगत जस छाई हो।।

अधम उधारन हेतु वशिष्ठ जू ल्याई हो।
ललना, नाम वाशिष्ठी धरेउ सुजन मन भाई हो।।

आनँद अवधि अपार बरनि नहिं जाई हो।।
ललना, खेचर वृन्द प्रमोद सुमन बरसाई हो।।

तोरन चारु सुचौक द्वार रचवाई हो।
ललना, कलश रुचिर मनि दीप ध्वजा फहराई हो।।

गनपति गौरि गिरीश गिरा गुर साईं हो।
ललना, पूजि यथोचित लाभ अलभ्य सु पाई हो।।

मंगल कौतुक मोद विनोद बधाई हो।
ललना, निरखि-निरखि योगीश विरति बिसराई हो।।

भूसुर वृन्द समाज नृपति बोलवाई हो।
ललना दान दक्षिणा दीन जौन जेहिं भाई हो।।

भूषन वसन मनि माल मँगन पहिराई हो।
ललना, जाचकजन सन्तुष्ट न कर फैलाई हो।।

भोजनु विविध प्रकार कियो सब लोगू हो।
ललना, सब मिलि देहिं अशीष मिटै भव रोगू हो।।

''मधुरी'' सुजस पुनीत प्रीत जुत गायो हो।
ललना, धन्य नगर नर-नारि जो नेह नहायो हो।।

रेखता पद - 10

बधाई प्रान मनहरनी। ललित ललि लाल की करनी।।
अमृत की धार समधरनी। नवलसुर वेलि सुख भरनी।।
मधुर स्वर ताल अनुसरनी, सुमन जल प्रेम की झरनी।।
सुमंगल साज सब बरनी। नखत शुभ जोग ग्रह ढरनी।।
ज्ञान जनि आगि जिमि अरनी। मिटावनि जीव की जरनी।।
सरित संसार की तरनी। नसावनि दुख जनम मरनी।।

माननी नाह की परनी। सँवारन घर की निज घरनी।।
प्रेम रसमोद की छरनी। अटल पद से नहीं टरनी।।

पद – 11

बधैया बाजै मुदमय आजै।
ज्येष्ठ शुक्ल तिथि पूरनमासी, योग लगन भल भ्राजै।
मंगल मूल दुकूल फूल द्रुम, तोरन लता विराजै।।
कदली पात ध्वजा जनु सोहै, कली छली डरि भाजै।
चमकति रेणु चारु चिन्तामणि, चौक मनो छवि छाजे।।
तरल तरंग सुरंग बढ़ावत, सुखद गान तर ताजै।
भँवर नटी नाना गति नाचति, छन्न–छन्न करि नव नाजै।।
जन्म महोत्सव रचहिं विविधविधि, रसिक सियारस राजैं।
''मधुरी'' आनँद अवध अपूरब, सुमन बरसि सुर गाजैं।।

खेमटा पद – 12

बधैया बाजै सरयू केरी।
सहस अमी की स्वाद कमी की, नमी मदन रव भेरी।। 1।।
गुन गन जटी छटी छवि प्रगटी, सटी परा सुख ढेरी।
प्रभा प्रताप प्रभाव परेसा, पावन पतित घनेरी।। 2।।
मंगलाचरन द्वार–द्वार पुर, सोभा चहुँदिसि घेरी।
नचि गावैं सखि रूप धरे री, कावेरी बहुतेरी।। 3।।
आनन्द अवधि–अवधि सम अवधहिं, अनत न उपमा हेरी।
सुखमा सदन विलोकहिं 'मधुरी' थकित गिरा मति मेरी।। 4।।

श्री हनुमान जी की बधाई

पद – 1

सब मिलि आवो री सजनी मंगल गाइये।
रानी अंजनी के भयो सुत बेगि बधावो जाइये।
आजु कैसो दिवस सजनी बड़े भागन पाइये।। 1।।

घसि चारु चन्दन लीपि आँगन मोतिन चौक पुराइये।
सात सींक सँवारि सखियाँ बन्दनवार बँधाइये।। 2।।

ललन मुख लखि लेउँ बलैया नैनन हियो सिराइये।
प्राण सरबस बारने करि फुली अँगन माइये।। 3।।

हिय हुती सो दृगन देखी भयो सबन्ह मन भाइये।
हित अनूप हमार जीवन विधना तू चिर जाइये।। 4।।

पद – 2

मंगल मूरति मारुत नन्दन। सकल अमंगल मूल निकदंन।
पवन तनय संतन हितकारी। हृदय विराजत अवध बिहारी।
मातु पिता गुरु गनपति सारद। सिवा समेत संभु सुकनारद।
चरन बंदि बिनवौं सब काहू। देहु रामपद नेह निबाहू।।
बंदौ राम लखन वैदेही। जे तुलसी के परम सनेही।।

पद – 3

बजत बधाई सुभ सदनन सखि प्रगटे वायु तनय बलशाली।
महासम्भु अवतार अवनितल देवि अञ्जना रुचि प्रतिपाली।।

सेवा सरस सुभाव भक्त हित दरसाये सब विधि रस राली ।। 1

प्रतिभा परम प्रकर्ष प्रकासित छाइ रही चहुँदिसि उजियाली ।
दम्भ द्रोह दारिद दूषण दल दुरेउ सकल कर्तव्य कुचाली ।। 2

प्रबल प्रचण्ड प्रताप पेखि जिय सकुचि उयेउ नभ पथ करमाली ।
जानि मधुर फल ग्रास विवांछित बढ़ेउ प्रयास रहित दै ताली ।। 3

अस अद्भुत गति अकथ अलौकिक दिव्य भव्य नित नव्य निराली ।
माधुरी हूँ की सीम रूप नव मोहन मन मन्मथ उर साली ।। 4

सुभग सिंगार सोह अँगन प्रति छाइ रह्यो मानहुँ छवि जाली ।
बारि गई रसराज सुतन मन परतम प्रेम की लखि सु प्रणाली ।। 5

पद – 4

बधाई रस भरी गावो, दिशायें रंग से छावो ।
ललन केशरि के प्रगटाने, करो उत्सव सु मनमाने ।।
पुरा के चौक मोतिन के कलश पै दीप जोतिन के ।
धरा करके सुभग सथियाँ, सिंचा सड़कें सु बर विथियाँ ।।
सु बन्दनवार बँधवाओ, झारि झालर को झलवाओ ।
बधावा विविध बजने दो, सु महफिलहूँ को सजने दो ।।
मँगाकर स्वर्ग से परियाँ, नचाओ करि सुमन झरियाँ ।
सु सुरभित बूँद बरसाओ, स्वयं हरषोरु हरषावो ।।
जला महताबि मुख देखो, कुतूहल बाजियाँ लेखो ।
निछावर नेह बँटने दो, सु सर्वस आज लुटने दो ।।
बहाकर प्रेम रसधारा, लहो रसराज रस सारा ।।

पद – 5

ललन को अञ्जना दुलरातीं।।
भरि–भरि गोद मोद मुख चूमति, कलित केलि शिशु गातीं।
दै अवलम्ब सु छिति ठाढ़ो करि, कर गहि कबहुँ नचातीं।।
भाव बताइ बढ़ाइ चाव नित, प्रमुदित ताल बजातीं।
लखि मुसुकान भान–तन भूलीं, रस रसराज न मातीं।।

पद – 6

अंजनि छौना हो तेरो युग–युग जीवै माई।।
गोद मोदमय मूरति सोहै, करत प्रमोद बिनोद सु दोहै,
निरखि–निरखि सुर नर मुनि मोहै, और कहैं कवि को
सियराम खेलौना हो।। 1।। ललित ललोना, सुद्ध सु सोना,
त्रिभुवन में न भयो नहीं होना लाल भाल पर श्याम दिठौना,
श्रीयुगल बिहारिनि हिय बिच भक्ति सु बोना हो।। 2।।

पद – 7

आवो–आवो सखी समुदाई गावो बधाई हो।।
जनम दिवस श्री पवन–सुवन को, सुखी करन जन सकल भुवन को,
अति प्यारो श्री सीय रमन को, दुष्टन मन मद हन को, जग जस छाई हो।। 1।।
बाल–विनोद प्रमोद बढ़ावन काल–कर्म दुख–दोष कढ़ावन,
श्याम गौर रंग–अंग चढ़ावन, कृपा सु कौंच मढ़ावन श्रीकपिराई हो।। 2।।

भयो न है होइहै नहिं आगे, श्रीहनुमत समान बड़भागे,
लोकालोक सोक लखि त्यागे, युगल नाम रस पागे,
श्री रघुराई हो ।। अरज यही अञ्जनी के वारे,
एक बार श्री राम दुलारे, मिलहिं पिया अंसनि भुजधारे,
श्रीयुगल बिहारिनि तारे, दृग छवि प्याई हो ।। 4 ।।

पद – 8

बाजै–बाजै बधाई आज पवन सुत प्रगट भयो ।।
कार्तिक मास असित पख चौदसि, त्रिभुवन में आनन्द छ्यो ।। 1
केशरि कपि के भवन सुआसिनि, रसमय मंगल गान ठयो ।। 2
देव निशान बजावत गावत, हरसत बरसत सुमन चयो ।। 3
प्रेम मोद रसिकन उर सरसत, सुचि रस सियपिय भक्ति जयो ।। 4

पद – 9

गावो–गावो सहेली आज पवन सुत सोहिलो री ।। 1 ।।
गुण मणि कलस साथियाँ बन्दन माल बनायो ।। 2 ।।
रसिकन के घर महा महोत्सव, प्रेम मोद सरसायो ।। 3 ।।

पद – 10

आज परम मंगल जग माई, कपिकुल भूषन जनम लियो है।
कार्तिक मास भौम सुभ चौदस, अर्ध निशा सुख उदै भयो है ।। 1
सकल लोक के शोक नसे सब, रसिकन के मन मोद छ्यो है।
सीतापति को सुयश प्रगट मनो, निशचर कुल कहँ काल उयो है ।। 2
हरि भूपति घर बजत बधाई, कनक रतन धन दान दयो है।
केशर खिली केशरी तन छवि सुकृत द्रुम फल प्रेम नयो है ।। 3

कीरति ध्वजा फरकि त्रिभुवन में, यश वितान जग छाय रह्यो है।
बनचर बंश प्रशंस निगम थकि, कबि कोबिद किमि जात कह्यो है।।4

बानर तियनि सहित सब नाचैं, गावत हँसत विनोद ठयो है।
देव सुमन बरषैं पुनि हरषैं, निडर कहैं डर मूल गयो है।। 5

देश-देश से कपि दल आयो, मिलत परस्पर सुख समयो है।
आदर करि पुनि पुत्र देखावैं सो छवि लखि सब चित्त गह्यो है।। 6

चौक पुरावैं बेद पढ़ावैं, शब्द करैं, जय जयति जयो है।।
मागध सूत द्वार बन्दीजन, जनु चातक घन स्वाति चयो है।। 7

श्रीहनुमत अवतार धरनि तल, अमल राम रस सर उमयो है।
कृपानिवास रसिक मन को ब्रत, जानि कृपा करि गुरु पुरयो है।। 8

पद - 11

परम सोहाई बजत बधाई।
मंगल मूरति हनुमत प्रगटे, आजु महामंगल जग माई।। 1

मंगल कपिकुल सकल सुजन सुख, मंगल अंजनि कोखि सोहाई।
कृपा निवास सु मंगल गावत, भक्ति निछावरि बहु विधि पाई।। 2

पद - 12

हनुमत देव दिवाकर उये री।
रजनी लों रजनीचर घरनी, आसा तिमिर तुये री।। 1।।

जरे जे कुमुद विमुख हरि निन्दक, सीतल सन्त हुये री।
कृपानिवास कमल लों फूले, करुना-किरनि छुये री।। 2।

पद - 13

जियै सुत तेरो केसरि रानी।

होय सपूत दूत सियवर को, राम रसिक रस सानी ।। 1

युग-युग अचल चलै जग कीरति, जब लगि सुरसरि पानी ।। 2

सुर बनितानि असीसत अंजनि, सुनि मन मुदित जुड़ानी ।। 3

विक्रम बली मधुर विपुलाई, होय न कबहूँ हानी ।। 4

पद - 14

पवन-सुवन मन भावन तत्त्व लखावन हो,
ललना केशरि कपि के भवन प्रगट छवि छावन हो ।। 1 ।।

मेष लगन दिन मंगल मास सुभ कातिक हो।
ललना कृष्ण पक्ष तिथि शुभ नखत भल स्वातिक हो ।। 2 ।।

बाजन लागि बधाई सरस सुखदाई हो।
ललना सोहिलो गाय सुआसिनि रंग मचाई हो ।। 3 ।।

अंगनि-आँगन भीर सु कौतुक राँचहिं हो।
ललना बन्दी मागध सूत नारि नर नाचहिं हो ।। 4 ।।

देव विमानन आय सुमन झरि लावहिं हो।
ललना जय-जयकार सुनाय महा मुद छावहिं हो ।। 5 ।।

विप्र वेद धुनि करहिं नन्दिमुख श्राधहिं हो।
ललना जात कर्म करि सकल देव अवराधहिं हो ।। 6 ।।

अंजनि केशरि सम्पति आनन्द भरि-भरि हो ।।
ललना विप्र जाचकन देहिं लेहिं सुख ढरि-ढरि हो ।। 7 ।।

बन्दन माल पताक कलश ध्वज आदिक हो।
ललना महल सुनगर सँवारि मगन मन स्वादिक हो।। 8।।
छठी बारही आदि किये सब उत्सव हो।
ललना प्रेम सुमोद अपार अकथ छवि नित नव हो।। 9।।

पद – 15

जनम सुनि अंजनि सुत को धाई।
हौं ढाढिनि केशरी वंश की, कीरति गुण नित गाई।। 1।।
लेउँ निछावरि आज न चुकिहौं, जो हमरे मन भाई।। 2।।
तेरे लाल को गोद खेलाऊँ, प्रेम मोद हुलसाई।। 3।।

पद – 16

भले दिन वर्ष गाँठ आज आई।
मंगल गावति चौक पुरावति, श्री हनुमत की माई ।। 1
सुनि नौबति धुनि गुनियन के गुन, घर–घर ते नव नागरि धाई।
''कृपानिवास'' विलास मगन भग, भूलि गई सुघराई ।। 2

पद 17

बजत बधाई आज मन भाई सुखदाई रंग छाई।
शुभ घड़ी लगन मुहूरत, मंगलवार सुचौदशि आई ।। 1।।
हरद दूब दधि रोचन रचना, गजमणि चौक पुराई।
''कृपानिवास'' मारुती–मूरति, मेरे नयन समाई।। 2।।

पद 18

किलोलत श्री अंजनि के गोद।
चितवन हाँ हूँ शब्द मनोहर, भरि रस रहसि विनोद।।
कर पद कमल चलावत मुसुकनि कोटि चाँदनी सोद।।
कृपानिवास निरखि हनुमत मुख, छवि भरि लोचन मोद।।

पद – 19

बरसत आनन्द रस मुखचन्द।
अंजनी गोद अकास प्रकासित, दुष्ट कंज भये मंद।। 1 ।।
नारी कुमुद चकोर पुरुष मन, भाव पोषि धर कंद।
'कृपानिवास' कृपा पूरनि निसि, उमगत प्रेम अमंद।। 2 ।।

पद – 20

मंगल धाम काम छवि मोहन प्यारे श्री अंजनि के लाल।
भक्ति हेतु बपु धारि अवनि पर, खुले रसिकन के भाल।। 1
शरणागत की वांछा पूरत जैसे बारिद माल।
दीन उबारन नाम बिदित जग, हनुमत रामशरण के पाल।। 2

पद – 21

जानकी रामकृपा की मूरति पूरन प्रगट भये कपिराज।
सुख शुभ गुण यश सिन्धु सुभग सर, रसिक भक्त सिरताज।। 1
खेम जगत जग जन्म हेमऋतु, हनुमत हरिसुत हरिकुल भ्राज।
कामद घन वन बरष कृपाकर, कृपा निवासी किरषी काज।। 2

पद – 22

सुनो सुहेलो सुख मंगलकारी गावति कपि कुल नारी।
रसिक सिरोमनि हनुमत जनमें राम रहस अधिकारी।। 1
हरदि दूब दधि केसर कुमकुम रचना रचति कुमारी।
कृपा निवास बिलास बिलोकत तन मन धन बलिहारी।। 2

पद – 23

लगन सुहाई माई रस की रतियाँ।
बनचर बधू मगन रस हँसि–हँसि करति परस्पर बतियाँ।। 1
आज भटू भयो वंश प्रशंसित देव सरब कपि जतियाँ।
कृपानिवास लाल हनुमत मुख निरखि जुड़ावति छतियाँ।। 2

पद – 24

सुघर सलोना अंजनी को छौना।
परम ललौना प्रान मिलौना सोहना मन उरझौना।। 1
राम रमौना रसिक रसौना मोहना नैन लगोना।
कृपानिवास उपास्य बड़ोना हमरे भाग्य सो होना।। 2

पद – 25

वारी सुखदाई मन भाई वो आज रँग धूम परी।
भक्ति सु पावस घुमड़ बलाहक बरसत प्रेम झरी।।
रसिकन के मन भरे सरोवर आशा बेली सुफल फरी।
कृपानिवास उपास्य श्रीहनुमत कपिकुल देह धरी।।

पद – 26

हरषि बधाई गावो आज जन्म गाँठ कपिराज
केशरि हरि घर घुरि रही नौबति नागरि जुर्‌यो समाज ।।
नाचैं नवला थकित भगति सब त्यागि जगत की लाज ।
कृपानिवास उपासिन के हित प्रगटे प्रेम जहाज ।।

पद – 27

हरिजन गावो जु मंगलचार सीतापति दरबार ।
राम सुसाहस पौरुष अंतस प्रगटे पवन कुमार ।।
सखी स्वरूप महल नित सेवत युगल भाव अधिकार ।
कृपानिवास अनन्य भक्त हित हरि लीन्हों अवतार ।।

पद – 28

मंगल गावति चौक पुरावति सुघर सुवासिनि रंग भरी ।
श्रीहनुमत को जन्म महोत्सव सब सुख सिन्धु की सरित ढरी ।।
पीवत राम रसिक रस जीवत छीवत भ्रम भय ब्याधि टरी ।
कृपानिवास उपासक मन की आसा बेलि सुफल फरी ।।

पद – 29

सुख सागर नागरि मगन विलोकति बोलति जै–जै धुनि सगरी ।
अंजनी अंग श्रवन सुख पाये श्री हनुमत हरिपति नगरी ।।
रतन अमोल सकल बसुधा तल कपिकुल भूषन लखि जगरी ।
कृपानिवास श्रीराम सुगाहक लायक लै पहिरैं पगरी ।।

पद - 30

मनमोद बढ़्यो सब रसिकन कुल रसिकराज को जन्म लख्यो।
घन घमंड मयूर लों नाचैं प्रफुल कमल लों रवि ज्यों तक्यो ।।
अमरन लों भयो भौंर गुञ्जारत सुयश उचारत निगम थक्यो।
कृपानिवास श्रीहनुमत गुरु को मंगल गावत रंग छक्यो ।।

पद - 31

अंजनी प्रातः समय आनन्द भरि गोदी हित सुत को हुलरावति।
जनु परतत्व समिटि बालक तनु हौले भक्ति कर डोल झुलावति ।।
दूध पिआवति कर पद चुम्बति कण्ठ लगाय महासुख पावति।
कृपानिवास अरुण सन्मुख ह्वै हनुमत कर अँगुरी बतरावति ।।

पद - 32

दृग लागो अंजनि को छौना।
प्रात अचानक कूद गगन सो रविजु धर्यो मानो फल को दोना ।।
सकल देव बर पाय प्रकास्यो बलनिधि गुननिधि लोना।
कृपानिवास रसिक को सतगुरु सीतापति को सुघर खिलौना ।।

पद - 33

भोजन करत प्रभंजन-नन्दन प्रेमाकर सुन्दर गजवन्दन।
शेष मैथिलीरमन थार के सने कमल कर मुख अरविन्दन ।। 1
विविध प्रकार स्वाद हित मूरति किरपा चारुशिला अधिकारी।
नेह बिबस बर सुघर रामसिय सुकर जेंवावति करि करुना री ।। 2

सखी सकल रुचिकार प्यार सों देत बदन हँसि कौरैं।
यह बलि शेष अबेश समय का मादक तर कर जोर निहोरैं।। 3

पूरब रोचिक पाल बतायो पाये हनुमत सुखद सोहाग्रे।
सरयू पय शीतल जल झारी रूपलता ललचाय पियाये।। 4

षोडस कोटि सखी सब भामिनि लेत प्रसाद-प्रसाद संगही।
देखत लाल बिलास हास रस खास खवासिन के रँग रँगही।। 5

समय-समय सुख मुक्ति भोगियाँ अँचवन करि फिरि मोहि बोलावै।
कृपानिवासी ढरि प्रनाम करि गुरु पनवारा हरषि उठावैं।। 6

पद - 34

आरति हनुमत पवन कुँवर की। रसिक अनन्य रामव्रत धर की।।
सियपति भक्ति सदन सुख सागर। जुगल उपासक रस गुन नागर।।
परम उदार कृपा की मूरति। शरन सुखद मनवाँछित पूरति।।
मधुर महारस ईश्वर तापर। त्रिगुण पारतम महामहेश्वर।।
निगम चारि षट् कीरति गावैं। ज्ञान योग जप पार न पावैं।।
कनक बरन तन तेज विराजै। अद्भुत छवि त्रिभुवन पर छाजै।।
अवध महल सुख के अधिकारी। प्रेम प्रवाह प्रणत उपकारी।।
विधिहरिहर सुर मुनि जन जेते। करत आरती हरष समेते।।
उमा रमा सचि सक्ति भारती। राम सुजन सब करत आरती।।
जगत ज्योति जगतिमिर बिखंडन। श्रीहनुमान प्रान सुख मंडन।।
बाजे राग रागिनी जहाँ लों। पद नुपूर ते प्रगट तहाँ लों।।
जो यह आरति हित नित गावैं। रंग महल बसि रसिक कहावैं।।

समझि लहैं ते परम उपासी। राम सिया सुख रहत बिलासी।।
कृपानिवास आरती गाई। रीझि कृपाकर निकट बसाई।।

पद – 35

पालने झूलै रंग सों, अंजनी जी को छौना।
कनक जटिल मनि पालना री मुक्ता फूँदना सोना।।
मातु झुलावति गावति मंगल लाड़ लड़ावति लोना।
कृपानिवास उपासक को धन सीतावर को सुघर खिलौना।।

पद – 36

हनुमत रंग रसाल झूलत पालने आज।
मदन डोल जनु लोल चन्द वर सुन्दर रूप बिशाल।।
राम रसिक रस मूरति पूरन रसिकन को प्रतिपाल।
कृपानिवास उपासक को धन जीवन अंजनि लाल।।

पद – 37

मारुति बदन छवि देखि–देखि जीवाँ।
माधुरी मूरति पर बारि पानी पीवाँ।
जननी उरसि पयोनिधि क्रीड़त बाल हंस सुख सीवाँ।
मुक्तामाल कर गहि कुच पीवत पय प्यारो ढरकत लगि ग्रीवाँ।
कृपानिवास उपासक वर के दौरि–दौरि पद छीवाँ।

पद – 38

अंजनि नन्दन तुम पर वारी रूप शिरोमणि गुन रस भारी।
रसिक जनन को रस बरसाओ जनम लियो सुन्दर सुखकारी।

कपिकुल मुनिकुल सुर कुल आनन्द गावत मंगल नर अरु नारी।
कृपानिवास हनुमत छवि ऊपर कोटि मदन शोभा बलिहारी।।

पद - 39

मारुति नन्दन भव भय भंजन प्रगटे भू पर आई।
अंजनि दिव्य भूमि मणि आकर हनुमत मणि प्रगटाई।।
देवन के दुख दारिद नाशे निज-निज भलहिं बसाई।
कार्तिक मास असित पख चौदसि बार भोग समुदाई।।
चर अरु अचर गगन जल थल दिशि आनन्द उर न समाई।
ब्योम बिमान गान धुनि किन्नर नृत्यत सुर समुदाई।।
इन्द्रादिक ब्रह्मादि देवता सुमन बृष्टि झरि लाई।
केशरिनन्दन जग अभिनन्दन कीरति अचल चलाई।।
लालमणी पर करहुँ कृपा प्रभु भक्ति-निछावरि पाई।।

पद - 40

कार्तिक मास असित तिथि चौदसि श्रीहनुमत अवतार लियो।
केशरि-नन्दन जनमन रंजन सजि सुख सबहिं दियो।।
शीतल मन्द सुगन्ध पवन चलि मेघन छाँह कियो।
बरसत पुष्पमाल इन्द्रादिक जै धुनि शब्द कियो।।
नाचति नभ अपसरा मुदित मन प्रेम पियूष पियो।
चौदह भुवन चराचर दशदिशि आनन्द हुलसि हियो।।
लंक शंक आनन्द देव गन जीवन सबहिं जियो।
'लालमणी' भव उदधि जनन लखि बूड़त काढ़ि लियो।।

पद - 41

आजु केशरी भवन भयो सुत भाग अंजनी कहि न सिराई।
ब्रह्मादिक जाको यश गावैं सनक सनन्दन अरु ऋषिराई।।
जो श्रीराम काम सब पूरन निज मुख जाकी कीरति गाई।
सो हनुमान ज्ञान गुन पूरन प्रगट भयो भूतल पर आई।।
भूमि-भार हरि राम सुयश करि कीरति अचल चलाई।
लालमणी निशिदिन यह जाँचत भक्ति निछावरि मन भरिपाई।

पद - 42

घर-घर मंगलचार सोहावन अंजनि प्रिय सुत जायो।
शुभ-नक्षत्र स्वाति शम्भू तिथि ऊर्ज मास सब भाँति सुहायो।।
मंगल करण आभरण अनुभव मंगल दिन महि नेह जनायो।।
निगमागम जाकी महिमा को निसदिन गावत पार न पायो।
नेति-नेति जेहि निगम बखानत ईशन ईश राम गुण गायो।
राज-राज महराज रघूत्तम निज मुख सुयश सरस अनमायो।।
श्रीमति शरण भक्त भय भंजन अंजनि नन्दन जन सुख पायो।

पद - 43

आज केशरी भवन बधाई।
शुभ लक्षण सुन्दर सुत जायो, बड़भागिनि भई अंजनि माई।।
वृद्ध वधू सब जुरि मिलि आई, यथा योग्य कुल रीति कराई।
दान मान विप्रन को दीन्हों, मणि मुक्ता पट भूषणताई।.
मृगनयनी कल कोकिल बयनी, करि सिंगार बैठीं अँगनाई।

नाम केशरी सुवन अंजनी, गारी गावत परम सोहाई।।
ध्वज पताक तोरण मणिजाला, द्वारन बन्दनवार बँधाई।
श्रीमतिशरण करण नवमंगल, जयति-जयति सब सुरन मनाई।।

पद - 44

देखि चरित मोहि अचरज आवै।
जन्म भयो चंचल कुल हनुमत, रीति देखि योगीश लजावैं।।
जासु बड़ाई श्रीमुख उघटत, प्रगट सुकोकिल मुनि नित गावैं।।
रवि सुत वित्तप तथा पुरन्दर, युद्ध निरखि श्रीपतिहुँ लजावैं।
यह महिमा कहुँ अनत न सुनियत, ताहि अंजनी गोद खेलावैं।।
जेहि दशमुख डर डरत विधाता, धाता चक्राघात अघावैं।
तेहि रावणहि पटकि महि झटकत, जस लघु पक्षी खेल खेलावैं।
ताको पकरि अंजनी अँगुरी, आँगन में चलिबो सिखलावैं।
हरि को देत हरिपना जो प्रभु, जेहिते शिव विरंचि पद पावैं।।
ब्रह्म अनादि अलक्ष्य अगोचर, ज्योति अजन्म अनन्त कहावैं।
सोइ रघुवंश विभूषण निजमुख, जासु ऋणी कहि सबहि सुनावैं।
सो प्रिय बदन सदन शोभा को मातु अंजनी गोद खेलावैं।
रंग रँगीली मंगल मूरति, 'श्रीमति' निरखि सदा सुख पावैं।।

पद - 45

बजे आज नौबतें गाढ़ी। बजावैं वंश की ढाढ़ी।।
हमारी आस अब बाढ़ी। दुवारै ऋद्धि सिधि ठाढ़ी।।
जुरी कपि नारि रँग भीनी। गावैं सुरताल मिलि कीनी।।

पुरावैं चौक मुक्तन के। खुले भण्डार सुख धन के।।
भये हनुमान शुभ घरियाँ। अंजनि उर रंग रस भरियाँ।।
निरखि सुत बदन मनहरियाँ। निछावरि मणिन की करियाँ।।
कृपानिवास सुख सरसैं। देवगण सुमन बहु बरसैं।।
रसिक सब चरन को परसैं। देखि छवि मनहिं मन हरसैं।।

पद – 46

बधाई मारुती गावैं। सुमन की माल बरसावैं।।
उमा ब्रह्मानि इन्द्रानी। रमादिक गान सुर ठानी।।
बीना मृदंग सारंगी। विष्णु विधि शंभु बहुरंगी।।
गान की तान झरि लावैं। नृत्य को मोद दरशावैं।।
उमगि चलि प्रेम सागर से। रसिक हनुमान नागर से।।
कृपा प्रभु दास पर कीजै। 'लाल' की भक्ति बर दीजै।।

पद – 47

चलो घर केशरी कपि के। बधाई गाइये कसि के।।
नचाई नाचिये सजि के। लुटाइये मोतियाँ गुथि के।।
कलश ध्वज बंद पुर सोहैं, देखि सब देवगण मोहैं।।
भाग सम अंजनी को है। नेत्र भरि बाल मुख जोहै।।
मोद भरि गोद दुलरावै। जनम का लाभ लुटि पावैं।।
लालमणि भक्ति बर पावैं। लाल को जन्म यश गावैं।।

पद – 48

सुवन सुचि अंजना जायो। महा मंगल जगत छायो।।
नरी बनि बानरी आवैं। सोहावन सोहिलो गावैं।।

सुनें सुर प्रीति उर बाढ़ी। सतिय भे ढाढ़िनी ठाढ़ी।।
नटै दै तालियाँ झिलकैं। सजी वह वा कहैं मिल कै।।
असीसैं लहि सुमन माला। जिये चिर अंजनी लाला।।
निरखि कपि कौतुकी केते। थिरकि तिन संग गति लेते।।
कोऊ कूदैं मगन मोदैं। लिए हनुमंत को गोदैं।।
दुलारैं चूमि चुचकारैं। तिनहुँ सो लैं अपर प्यारैं।।
पवन पुष्पावली बरषैं। ललन को हेरि के हरषैं।।
सुयश रसरंग मणि वरणैं। सुनावैं श्रीमती शरणैं।।

पद – 49

बधाई वायु–लालन की। सुगाइय मोद मालन की।।
सुमंगल मास क्या कार्तिक। नखत मंगलमयी स्वातिक।।
दिवस मंगल महा मंगल। असित चौदस सु रस रङ्गन।।
सोहाई साँझ की बेला। जनम भो मौज की मेला।।
सुयश कहि सुर सुमन बरषैं। सु अंजनि पवन सुनि हरषैं।।
हमनि को बन्दि छोरोगे।. निशाचर वंश बोरोगे।।
सियाबर भक्ति रस रंगी। सोहाई बीर बजरंगी।।
अनन्दी आपने चरणै। लगाई श्रीमती शरणै।।

पद – 50

जुग–जुग जीवै तेरो लालन अंजनी माई।
रूप शिरोमणि सब गुण सागर, तेरे भाव सिहावन।
ब्रह्मादिक जाके बसवर्ती, सो तेरे गोद खेलावन।

सिय प्यारे संग रहत हजूरी, रसिकन रस बरसावन।
कृपानिवास मनोहर मूरति, हमरे भाग सो भावन ।।

पद – 51

सोहत बाल रूप श्रीहनुमत अँग सुषमा सरसायो ।
कनक बरन तन सुभग मनोहर पिंगल दृग छवि छायो ।।
अरुन अधर कर चरण नखत द्युति लाँगुल सुभग सुहायो।
रसिक बाल छवि यह हनुमत की भक्तन को सुखदायो ।।

पद – 52

बरस गाँठ शुभ मारुत सुत की सिय रघुबर घर बजत बधाई।
कनक भवन छवि कवन कहै कवि, रिधि सिधि जहँ सेवकाई ।।
दिव्य भव्य सिंहासन दम्पति रतिपति कोटि लजाई।
आगे लाल ललित कर लालति बाल रूप कपिराई ।।
किलकत ललकि-ललकि लखि प्रभु को निगम नेति सुख पाई।
उमग्यो प्रेम पयोधि दसौ दिसि देव सुमन झरि लाई ।।
जय-जय रव पूर्‌यो सब लोकन सोक गयो समुदाई।
युगल विहारिनि युगल प्रान प्रिय सुजस नवल नित गाई ।।

पद – 53

अञ्जनी सुवन जायो त्रिभुवन यश छायो,
कृष्ण तिथि चौदस कातिक श्रुति गाय है।
भरी है सोहाग भाग अति अनुराग रंग,
पायो है सुकृत फल जैसो मन भाय है ।।

गोद में खेलावैं, हलरावैं, गुण गावैं भावैं,
अति सुख पावैं जाकी उपमा न पाय है।
ज्ञानाअलि भोर ही दिवाकर उदित देखि,
उचकि उचंग ते मधुर फल खाय है।।

पद - 54

कपि केशरीनन्दन जन्म लियो नृप दशरथ सुत हिय जगमहियाँ।
ऐसो सुचि सेवक लोक तिहूँ हनुमान सरिस कतहूँ नहियाँ।।
जिन फाँदि सिंधु सिय दरस कीन फय खाय अघाय अभै गहियाँ।
दहि लंक प्रबल गढ़ बंक महा कहि सकल कथा रघुपति पहियाँ।।
रचि सेतु शत्रु रण जीति लियो दै राज विभीषण गहि बहियाँ।
ज्ञानाअलि सिय लै पियहिं सौंपि दै राज अवधपुर यश लहियाँ।।

पद - 55

अंजनी माई तेरो सुत प्रिय जीजै।
नित उत्साह अथाह उदधि मधि प्रेम तरंग अँग-अँग भीजे।
निरहेतुकी कृपा तव सुत-द्रुम जाके ऊपर कीजै।।
ताकौ तिहूँकाल मंगल मुद तन मन भव रुज छीजै।।
मुग्ध जानि हे अम्ब ! पानि गहि सँग खेलन सुख दीजै।
नामामृत सुप्रसादी निज सिसु युगल विहारिनि दीजै।।

पद - 56

बढ़न लागे लालन लेवो बलैया।
जननी कर गहि खड़े होन लगे शब्द कढ़न लगे मैया।

कबहुँ घुटुरुवन चलि–चलि अँग–अँग चढ़न लगे हैं कँधैया।।
उबटन करि अन्हवाय मढ़न लगे प्रेम कौच छवि छैया।
नाम रामवल्लभा पढ़न लगे सियवर प्रिय रघुरैया।।

पद – 57

अञ्जनी लालन गोद खैलावैं।।
मूरति मोद विनोद करन प्रिय हिय लावैं दुलरावैं।
नाना भाँति चरित रघुपति के जननी अति हित गावैं।।
राम–नाम अभिराम कामप्रद सुनि अँग–अँग उमगावै।
आनन सम आनन न आन कहुँ चतुरानन सकुचावैं।।
त्रिभुवन के दुख दवन रवन सिय अति प्रीतम श्रुति गावैं।
रामवल्लभाशरण चरण नित भक्ति अभय वर पावैं।।

पद 58

बालकेलि करत आसुग सुत लखि जननी सुख छाय।
कबहुँक लतन द्रुमन चढ़ि क्रीड़त कबहुँ गिरिन पर जाय।।
निज प्रतिबिम्ब देखि जल भीतर चलत सभीत पराय।
रसिक अंजनी लेत गोद भरि मोद भरी सरसाय।।

पद – 59

जियो–जियो महारानी अंजनि तेरो लाल।
राम रँगीले परम हठीले महाशम्भु प्रगटेउ तेरो बाल।
सिया रघुनन्दन प्रान पियारे असुर निकन्दन है जनपाल।।
गजरथ तुरग हेम गो हीरा न्यौछावरी दीन गलमाल।
चूड़ामणि अँखियन के तारे दरश पाइ होइ गयो निहाल।'

पद – 60

जियै सुत तेरो केशरि रानी।
होय सपूत दूत सियवर को राम रसिक रस सानी।
युग-युग अचल चलै जग कीरति जब लगि सुरसरि पानी।।
सुर बनितादि असीसत अंजनि सुनि मन मुदित जुड़ानी।
विक्रमबली मधुर विपुलाई होय न कबहूँ हानी।।

।। सोरठा ।।

महा मरुत को मूल, तेज गर्भ उर धारि कै।
सुख सम्पत्ति अनुकूल, अञ्जनि निवसी गिरि गुहा।।

।। चौपाई ।।

हनुमत जनम समय सुखदाई। मंगल मूल बरनि नहिं जाई।
ऋतु सबकर हितु शरद सुहावन। शशि सम्पन्न अवनि बन पावन।
सरसिन सरसिज संकुल फूले। भृङ्ग पुंज गुंजत मंजूले।
निरमल जल थल दिशा अकाशा। खलमन मलिन सुजन सुखरासा।
कातिक महा मनोहर मासू। असित चतुरदशि शिव तिथि खासू।।
मंगलमय मंगल वर वारा। अवनि सुवन सिय बन्धु पियारा।
नखत सरस स्वाती सुखरासू। हनुमत पिता पवन पति जासू।
मेष विशेष लगन मुद मूला। सब ग्रह योग भले अनुकूला।।

।। दोहा ।।

गोधूली बेला विमल, शिव प्रिय प्रथित प्रदोस ।
पवन पुण्य फल प्रगट भे, जग मंगल निरजोस ।।

प्रगटे जग मंगल लोचन पिंगल शालि वरन अनुहारी ।
पद करतल लोने सारस सोने आनन रवि छवि हारी ।।

प्रसवति लखि नन्दन पूरि अनन्दन पवन सुवन झरि कारी ।
पारस इव रंका लै निज अंका पय प्यावति महतारी ।।

चूमै चुचकारै हरषि दुलारै हिय लावै हरलाई ।
अंजनि मन रंजन सुकृत प्रभंजन कपि केशरि सुखदाई ।।

होइहैं सब लायक जग जस छायक रघुनायक मन भाई ।
सिय पिय पद संगहिं 'मणि रस रंगहिं' प्रेम उमंग लगाई ।।

दोहा

खल अरबिन्द विनाशकर, सुजन कुमुद आनन्द ।
अञ्जनि उर अम्भोदि ते, उदित भये कपिचन्द ।।

स्वामी श्रीरामानन्द जी की बधाई

पद - 1

आज परम मंगल द्विजवर घर हरि नर को अवतार लये।
माघ मास सुचि पाख असित तिथि सातै चित्रा नखत भये।।
कुम्भ लगन शुभ सिद्धि योग ग्रह वार विमल अनुकूल भये।
सुनि सुत जनम भूरिकर्मा तब सकल याचकन दान दये।।
जातकर्म करि महा मुदित मन गुरुकुलबृद्धन चरण नये।
भाग निधान प्रयाग निवासी सब आई अनुराग रये।।
मंगल थार गहे तिनकी तिय आई उरन उछाह छये।
लखि सुन्दर सुत न्यौछावरि करि समय सुहावन गान ठये।।
बजत बधावन नाचहिं नागरि अङ्गन भाव देखाय नये।
कहि न जात तेहि अवसर को सुख सबके सब दुख बिसरि गये।।
तब कैसे अबहूँ बिचरहिं जे आचारज उत्सव नितये।
ते तरिहैं 'रसरंग मणी' भव रामानन्द कृपा चितये।।1।।

पद - 2

मंगल मास माघ सुखदाई।
मंगल पाख असित सातैं तिथि मंगलवार योग समुदाई।।
मंगल गंग यमुन प्रयाग थल मंगल तहँ के लोग लुगाई।
मंगल रूप भूरिकर्मा द्विज मंगलमयी सुशीला माई।।

मंगल मूल राम जाके उर प्रगटे रामानन्द कहाई।
मंगल राशि पुरी काशी जहँ वेद पुरान पढ़े प्रभु आई।।
मंगल श्री सम्पदा विभूषण गुरू राघवानन्द सु पाई।
मंगल तारक राम मंत्र निधि तिन सों लिये किये सेवकाई।।
मंगल विश्व विधायक गुनि गुरु गये सौंपि सब भजन कमाई।
मंगल प्रबल प्रताप साधुता फैलि गई जग विमल बड़ाई।।
मंगल सदन शिष्य स्वामी के भये तेरहों शुचि शरणाई।
मंगल यश जिनके द्वारादिक जाहिर भक्तमाल भल गाई।।
मंगल मण्डन मारतण्ड सम सन्त सरोज बिपिन बिकसाई।
मंगल कारक कलि कुचाल निशितम अखण्ड पथ दिये दिखाई।।
मंगल सुलभ भक्ति मारग सिधि मन्त्र राम तारकहिं दृढ़ाई।
मंगल सेतु विरचि भव सागर तारे जीव कृपा अधिकाई।।
मंगल चरित सुनत जिन कर शुभ अखिल अमंगल मूल मिटाई।
मंगल जन्म उछाह सु तिनको करहिं सुजन प्रति वर्ष बधाई।।
मंगल अवध सुमङ्गल सरयू मङ्गल सन्त समाज सदाई।
मंगल मणि रस रंग लहै श्रीरामानन्द सुमङ्गल गाई।।2।।

पद – 3

बधाई गाइये प्यारी। जन्म आचार्य सुखकारी।।
भनै को भाग द्विजवर की। जुटावैं सम्पदा घर की।।
चलीं सब प्राग की नारी। सजे मङ्गल लिये भारी।।
लखैं शिशु सोहिलो गावैं। सबै सम्मान सुख पावैं।।

दुवारे नौबतैं बाजैं। नचैं तिय त्यागि के लाजैं।।
पुरोहित कुण्डली साधैं। करैं नान्दीमुखी श्राधैं।।
गगन ते सुर सुमन बरषैं। धरम रक्षक समुझि हरषैं।।
हरी अवतार आरामी। श्री रामानन्द गुरु स्वामी।।
मन्त्र तारक सुमन मग से। उधारे जीव कलियुग से।।
अजहुँ उत्सव जनम दिन को। रचैं जे धन्य हैं तिनको।।
गहे प्रभु सम्प्रदा शरणैं। सुयश रसरंग मणि बरणैं।।

पद - 4

आजु बधाई श्री सतगुरु की गावो संत सु आई।
प्रगट भये साकेत धाम ते जगतारण सुखदाई।।
जीव-पीव के मध्य मेल हित श्रीगुरु एक उपाई।।1।।
संस्कार युत युगल मंत्रवर दीन्हेउ तान दृढ़ाई।
जागृत स्वप्न सुषुप्ति तुरीया हिय मध्ये दरसाई।। 2।।
त्रय रहस्य परतत्व लखायो रस अनन्य सेवकाई।
प्रेम मोद माधुर्य सु गुरु पर बार-बार बलि जाई।। 3।।

पद - 5

बलिहारी अली श्रीसतगुरु की।।
चिन्मय दिव्य अलौकिक अनुपम मुख मूलक छवि रसधुर की।। 1
प्रगट भयेउ नर रूप सुखद हरि सेवक उर सुचि रुचि फुर की।। 2
प्रेम मोद गावत गुण निस दिन बास चहत श्रीगुरु पुर की।। 3

पद – 6

बधाई बाजती रस भीनी। श्रीसद्गुरु के नवीनी।।
प्राणनाथ प्रगटे करुणाकरि पर परत्व तजि दीनी।
सौलभ रूप सकल जीवन हित, सहजहिं निज कर लीनी।।
भाव भक्ति भल भेद लखाकर, जग रति की करि हीनी।
पिय पद पंकज प्रीति दृढ़ायो, सरसायो सुख झीनी।।
गावत ही रसराज सु गुणगण, भई परम प्रण पीनी।
अचल नेह सम्बन्ध निरन्तर, निधि निवसी मनमीनी।।

पद – 7

आचारज को जनम महोत्सव गावत संत बधाई।।
मास पाख दिन तिथी नखत ग्रह मंगल साज सजाई।।
बन्दनमाल वितान कलशध्वज मोतियन चौक पुराई।।1।।
नाचैं गावैं रस उपजावैं बाजे विविध बधाई।
राग रागिनी छाइ रह्यो है आनन्द हिय उमगाई।।2।।
नभ विमान सुर थकित है रहे सुमन माल बरषाई।
बन्दी मागध सूत सु जातक वरणत गुण सुघराई।।3।।
दान मान निवछावरि अगणित पावत सबहिं अघाई।
केलि कोलाहल कौतुक देखत देह–दशा विसराई।।4।।
कबहुँ पालने झूलत किलकत गावति मंगल माई।
चिरजीवहिं श्री सतगुरु प्यारे प्रेम मोद मन भाई।।5।।

पद - 8

बजत बधाई रसिक सु गुरु की बरष गाँठ आज आई।
मंगल साज-साजि सब सुखकर गायक संत बोलाई।। 1।।

स्वागत करि बैठाय सु आसन असन बसन पहिराई।
चन्दन माल पान सौगन्धैं जल सु पवन अरपाई।। 2।।

होन लगेउ रस खान गान बर बाजत साज सुहाई।
छन्द-प्रबन्ध अनेक भाँति के उघटत आनन्द छाई।। 3।।

निरतत नर्तक विविध वेष धरि भाव कलन दरसाई।
प्रेममोद यह सुख रस अनुपम सतगुरु कृपा सु पाई।। 4।।

पद - 9

भजो मन श्री सतगुरु सुखदानी।

कृपा-सिन्धु नर रूप हरीश्वर जाको वेद बखानी।
जासु वचन रवि मोह नास निशि भइ स्वरूप पहिचानी।। 1।।

सिय प्रीतम सो बाँह गहायउ हेतु रहित निज जानी।
जन्म मरन भव रोग नसायो दै सु भक्ति रस खानी।। 2।।

बहुमत पंथ जहाँ-तहँ झगरो बाद रहित गरुवानी।
प्रेमलता सब आस छोड़ि के साधन-साध्य पिछानी।। 3।।

पद - 10

श्री सद्‌गुरु सुख सागर परम उजागर हो।
ललना प्रगटे जगहित हेतु सुछिति नव नागर हो।। 1।।

जोग लगन ग्रह वार नखत भल सोहै हो।
ललना मास पाख छवि खानि देखि मन मोहै हो।। 2।।

बाजन लागी बधाई सु परम सुहाई हो।
ललना नाचैं गावैं राग तान नभ छाई हो ।। 3 ।।

देव विमानन आइ निशान बजावैं हो ।।
ललना जय जयकार सुनाय सुमन झरि लावैं हो ।। 4 ।।

तात मात हिय हरष न कछु कहि आवैं हो ।।
ललना निरखि-निरखि सुत बदन सुभाग मनावैं हो ।। 5 ।।

जो यह सोहिलो गावहिं हिय उमगावहिं हो।
ललना श्रीसद्गुरु ढिग दास रूप निज पावहिं हो ।। 6 ।।

श्रीसद्गुरु पद कमल भक्ति मन-भावहिं हो।
ललना प्रेम मोद रस खानि भाल सुख छावहि हों ।। 7 ।।

पद - 11

प्रगट भये जा दिन सतगुरु गृह मेरे भाग सो आई री।
ता दिन सो नितहीं नव मंगल बाजत विविध बधाई री।
मोद प्रमोद विनोद उछाहैं अनुदिन उर अधिकाई री ।। 1 ।।

भक्ति प्रपत्ति प्रबोध स्वरूपहिं जथा तथ्य दरसाई री।
भाव विकास प्रकास प्रबल अति दृग की दोष नसाई री ।। 2 ।।

सुचि रस रूप सँबन्ध सनातन करि तहँ नित स्थायी री।
अष्टयाम अन्तर शुभ सेवा बाहिरहूँ छवि छाई री ।। 3 ।।

भोग राग नित ही नवीन रति षटरितु रीति सुहाई री।
रसराजहिं आचार्य कृपा ते सौलभ सुख सरसाई री ।। 4 ।।

पद –53

श्रीगुरुवरजू के बरष गाँठ सखि सब मिलि सोहिलो गावो री।।
कुंज–कुंज सुख पुंज महल में चहल सु पहल मचावो री।
चौकें सुभग साथियाँ सौजें कलश दीप धरवावो री।। 1।।
बन्दनवार सुकेतु पताकनि ध्वज शिखरनि फहरावो री।
बन्दी भाट विदूषक कत्थक इन कहँ वेगि बुलावो री।। 2।।
विरदावली सुयश कल कौतुक नाट्य–कला करवावो री।
रीझि रिझावो बलि–बलि जावो आनन्द उर न समावो री।। 3।।
भूषण वसन नवल तन पहिरो इनहुँन कहँ पहिरावो री।
सरस मोद भरि छाकि छको रसराज सुनिधि उमड़ावो री।। 4।।

पद – 60

बन्दौ चरण कमल गुरुवर के रसमय सुपद सोहायो।
भव–सरिता कहँ नाव सबन्हि को मनरुज हर रज पायो।।
सकल विभव बस होत धरे सिर रज परत्व मुनि गायो।
आचारज हमहीं को जानै कह प्रभु वेद लखायो।।
जे गुरु नमत बूरि परि कत भय तेहि लखि काल डेरायो।
चरणामृत पीवत जे सिर धरि तीरथ सब ते नहायो।।
हरि ते प्रथमहिं गुरु कर सेवन विधिवत करै सु भायो।
धरम मूल गुरु सेवन परतम मोक्ष मूल अपनायो।।
भजन–मूल गुरु गात सु चिन्मय मंत्र मूल वच भायो।

जे गुरु–उत्सव करत प्रेम भरि वित्त साठ्य बिसरायो।
स्वारथ छल तजि करम वचन मन निस दिन लाड़ लड़ायो।
ब्रह्मादिक ताके गुण गावत पूजत हित चित चायो।।
सीतापति गुरु सेवक के बस होत परत्व भुलायो।
अघ बारक भव नासक पुर नित वास सु वेद बतायो।।
श्रेय रूप तारक पर चारक भाविक ध्यान समायो।
वाराणसि को अर्थ जानि भजु गुरु ग्रह तर्क मिटायो।।
सप्त पुरिन में षष्ठम् सोहै जहँ प्रभु अंग गनायो।
प्रेम मोद सिद्धान्त सार यह सियवर आप लखायो।।

पद – 14

बधाई गाइये नीकी। रसिक गुरुदेव वर जू की।।
परात्पर धाम के बासी। महा आनन्द सुखरासी।।
प्रगट यह लोक में आके। महा माधुर्य रस छाके।।
युगल बर मंत्र को देके। मिलावत जीव अरु पी के।।
हमन के भाग से आये। करो उत्साह मन भाये।।
सु मंगल साज सजवाओ। दुआरे चौक पुरवाओ।।
कलश अरु दीप धरवावो। नृत्य के भेद दरसावो।।
चलो गुरुदेव दरवाजे। करो मन भावते आजे।।
न राखो लाज के ताजे। मचावो मौज के माजे।।
महा रसमोद के छाके। सु पावो पीव के धाके।।

पद – 15

बधाई गुरुदेव की गावो। मगन रस तोप सुख पावो।
परो ना सोक सागर में। रहो नित स्वामि चाकर में।।
गुरू से तत्व नहि श्रुति में। सियावर मिलन के प्रति में।
गुरु जिनको नहीं प्यारे, तिन्हें साधन नहीं तारे।।
लखो यह त्यागि मद माना। गहो नित स्वामि पदत्राना।।
करो सुख प्रेम से सेवन। जनम को लाभ लहि जीवन।।

पद – 16

जनम दिन आजु लखु आयो। श्रीसद्गुरु के मन भायो।।
मन्दिर में मोद है छायो। दुन्दुभी धुनि सु सरसायो।।
सहेलिन सोहिलो गातीं। सुयस रस रूप में मातीं।।
सु विधु मुख सब निरखती हैं। प्रसूनैं कोइ बरसती हैं।
मनाती भाग भूरी को। सु पाकर प्राण मूरी को।।
बलैया बेरि-बेरि लेतीं। निछावरि बरबसैं देतीं।।
बरसती नेह की वारी। सु सुरभित ताप त्रय हारी।।
चली बहि मोद की धारा। सुरस रसराज सुख सारा।।

पद – 17

चलो री आज सज धज के। नगारे नेह मय बजि के।।
श्री सद्गुरु सु कुंजै री। मचावो सुख के पुंजै री।।
बधाई तान लै गावो। दिसायें रंग से छावो।।

कलायें नाट्य के करना। हृदय सुख सिन्धु सो भरना।।
जनम दिन आज गुरुवर का। सकल शुभ गुण कलाधर का।
निछावर कर दो जीवन धन। असीमित हैं ये आनन्द घन।।
सहज ही में नवल तन का। सु होगा ज्ञान निज पन का।
रती अविचल के अधिकारी। सु होते ही पिया प्यारी।।
मिलेंगे मोद के भर के। सुरस रस राज कर धर के।।

दोहा

जग निवास जगदीश हरि, जगत शरण दातार।
जन रक्षन पन दक्ष अति, लीन्ह मनुज अवतार।। 1।।

छन्द

श्री गुरु प्रगटाने छवि रस साने लखि माता सुख फूली।
सद चिद मुद मूला जन अनुकूला उपमा अपर न तूली।।
रवि ससि सद जोती अग्नि समोती जगमग किरण पसारी।
नख सिख लो सुन्दर रूप मनोहर मन भावन सुखकारी।। 1।।

जन कुलहि सु मण्डन खल-कुल खण्डन तारक मंत्र प्रचारी।
अति दीन उबारन भव निधि तारन बिनु कारन उपकारी।।
तिहँ तनहिं सु नासक भाव प्रकासक, तुरिया तन अविनाशी।
त्रय रहस अकारा मन वच पारा अर्थ अलौकिक रासी।। 2।।

कलि-कलुष विनासी प्रेम प्रकाशी सुख कारण दुखहारी।
प्रभु इच्छाचारी स्वबस बिहारी, जग-जीवन प्रिय कारी।।

रक्षक श्रुति सेतुं सतकुल केतुं वन्दित सदा अमानम्।
निगमादि सुगीतं चरित पुनीतं भवभय शमन निदानम्।। 3।।

सेवित वर चरणं आश्रम वरणं शरणद कृपा निधानम्।
आश्रित सब लायक तद्गुण छायक प्रेम भक्ति वरदानम्।।

यह चरित जे गावहिं सब सुख पावहिं प्रेम मोद मन भावैं।
सिय पुर चलि जावैं बहुरि न आवैं रूप समीप रहावैं।। 4।।

दोहा

अघ घायल गो संत द्विज पालक कृपा अगार।
बालक बपु रोवन लगे मंगल मोद प्रचार।।

पद - 18

जै जैकार श्री सतगुरु की करुणा करि अवतार लयो।
आदि अखण्ड ब्रह्म सीतापति जनहित लीला स्वरुचि ठयो।। 1।।

महा मोह रावण के वंसहि मारि सुयस प्रगटायो।
भक्तन के उर सुभग देश में सुर सद्गुणहिं बसायो।। 2।।

प्रमदा बन एक रूप रहत नित रास बिलास समायो।
सहज स्वरूप शक्ति चिद चिन्मय रसमय नाम सोहायो।। 3।।

आचारज होइ एक पाद में सौलभ गुण गहि आयो।
नख सिख छबि हिय ध्यान सु कीजै सतचित आनन्द भायो।। 4।।

नख सुरसरि तल सारद छविहर पृष्ठ जमुन दरसायो।
ललित त्रिवेणी तीर बसत नित माधव गुल्फ सुहायो।। 5।।

जंघा जानु सु उरु अनुपम कटि रुचिर सूक्ष्म फल दायो।
नाभि-रोम त्रिबली उर ग्रीवा भुज कर सुषमा छायो ।। 6 ।।

सरस ज्ञान अनुभव गुण-गण फुर अभय दान भयो हायो।
चिबुक अधर रद ओठ सुरसना नाम सुजस हलरायो ।। 7 ।।

घ्राण सुगन्ध रूप दृग भृकुटी इष्ट प्रेम उमगायो।
श्रवण पुकार कपोल पोलहर भाल तिलक सरसायो ।। 8 ।।

सिर अरु केश परेश रसेसहिं श्री सुचि पदहिं चढ़ायो।
भव्य बसन भूषण प्रति अंगन सुख आसन थिरतायो ।। 9 ।।

छत्र चमर विजनादिक सेवा परिकर लाड़ लड़ायो।
प्रेममोद यह ध्यान सुदुर्लभ सद्गुरु कृपा सु पायो ।। 10 ।।

श्री युगलाष्टक

श्लोक

साधूनां प्रथमो विभाति युगलानन्यो वरो नेतरः ।
दातृणां प्रथमो विभाति युगलानन्यो वरो नेतरः ।।

वक्तृणां प्रथमो विभाति युगलानन्यो वरो नेतरः ।
श्रोतृणां प्रथमो विभाति युगलानन्यो वरो नेतरः ।।

कवित्त

श्री गुरुदेव ही ते ज्ञान विज्ञान होत
भक्ति पद भेद बहु ग्रंथ बीच गाये हैं।
इह लोक परलोक लोकालोक जेते ज्ञेय
ध्येय अनुमेय श्री गुरुजू जनाये हैं ।।
वेद सब खेद बिना गुरु को परत्व कहैं
गुरु बिन भेद कोऊ कहूँ नहीं पाये हैं।
कोऊ करो साधन अराधन अनादि देव
'जानकी सुबर' महाराज गुरु पाये हैं।।
श्रीगुरु स्वामी जू ते भये नहिं कोऊ और
होने न अखिल लोक विदित प्रताप हैं।
काम क्रोध लोभ मोह माया मद करि कर
नासिबे को पंचानन राजैं करि दाप हैं।।

दंभ रत पाप गत विमुख कुजन तम
तोम के समान दिनकर सम आप हैं।
रसिकन रस सालि पोषिबे को वारिद से
मेरे से अधम को तो एई माई बाप हैं।। 2।।

सम्मुख होत जाके आनन्द उदोत होत
मिटत कुअंक भाल रंकन को नकशैं।
पावन पदुम पद परम पराग परे
फैलति प्रभाव भूरि संत कवि सकशैं।।
दूर होत जनम अनेकन की बाधा दाह
मिटत अदोष भानु मंदन की अकशैं।
श्री युगल अनन्य शरण सेवक सुमंडल पै
अखंडल की साहिबी कमंडल से बकशैं।। 3 ।।

करन से दानी सनमानी रघुबीर जन
सुभट कृपानी सम पारथ बखानिये।
भानु सों प्रताप तेज जस रजनीस सम
कोटिन फनीस छंद गति अनुमानिये।।
भार-धर धरा सम पालक सुजल रीति
घायल दुअन भृगुपति सम जानिये।
चिरंजीव लोमस समान 'रंगनाथ' भनै
युगल अनन्य प्रभु सील गुन खानिये।। 4 ।।

श्रीमद्युगलानन्य शरणाष्टक (प्रथम)

भावनि सो छानी छमा छोर लों समानी

भ्रम तापि नहिं मानी परमानंद की दानी है।

ठानी महिमानी मन मानी प्रिय प्रानिन की

ज्ञानिन प्रमानी–प्रीति–नीति की निसानी है।।

सकै को बखानी प्रानी युगल अनन्य जी की

राम रस सानी चारु चोजन की खानी है।

सारदा चुपानी सुधा माधुरी छिपानी पर–

बानी सरमानी सबै मानी महरानी है।। 1।।

सीताराम नाम सुधा–सिन्धु में समाने रहे

माया मान भाने गहे बान मोद जन्य हैं।

सीलताई साधुताई सरल सनेहताई

सुद्ध बुद्धताई पंडिताई के अरन्य हैं।।

मोहदल गंजन को दीन जन रंजन को

भारी भीति भंजन को संबली सरन्य हैं।

रसिक अनन्य न में संत अग्र गन्यन में

धन्यन में धन्य गन्य युगल में अनन्य है।। 2।।

रोम–रोम सीयराम नाम लै अराम लहैं

लोचन विराम गौर श्याम सो न अन्य हैं।

श्री युगलाष्टक

जोग जप संजम समाधि नेम ज्ञान ध्यान
पूजन-विधान में सुजान अग्रगन्य हैं।।
सुखद महान दया सील को निधान
सबै प्रेमिन के प्रान बेप्रमान मोद जन्य हैं।
घोर भव-धार ताकी तारक उदार राग-
रंग बेसुमार छाके युगल अनन्य है।। 3 ।।

पंडित महान महा ज्ञान प्रेम को निधान
ज्ञानमान दयामान बुद्धिमान लेखे मैं।
भगति भंडार भले भावनि को पारावार
दीनन अधार सु उदार अवरेखे मैं।।
रागवंत रूपवंत सरल स्वभाववंत
सीलवंत सत्यवंत सन्त बहु पेखे मैं।
परम अनन्य राम धरम धुरीन धन्य
युगल अनन्य सो न अन्य सुने-देखे मैं।। 4 ।।

काहे को कलेस देत देह को बेहेतु मूढ़
जाग तप त्याग नेम ब्रतहिं गिहाऊ रे।
तीरथ पयान बेठेकान को भुलान फिरै
दान को विधान हू न जान को जुड़ाउ रे।।
जोग जप संजम समाधि में उपाधि महा
मानि मत मेरो सब साधन बहाउ रे।

युगल अनन्य जू की सरन सिधारि चारु
बेगि बेसुमार भव धार पार पाउ रे।। 5।।

कठिन कराल कलिकाल में बेहाल जीव
हेरि है दयाल मोह जाल मेटि डारी है।
सीताराम नाम रूप धाम गुन गाय भलो
भाय सरसाय सुख छाय दियो भारी है।।
त्याग औ विराग अनुराग राग रंग-लाग
सुगुन सुभाग को अदाग उजियारी है।।
रसिक अनन्य जग जाहिर न ऐसो अन्य
युगल अनन्य धन्य महिमा तिहारी है।। 6।।

दूतन बुलाय कै रिसाय धर्मराज कह्यो
गयो गफिलाय काहे पातकी न लावते।
कीजे कहा नाथ उहाँ युगल अनन्य सबै
जीवन सरन्य पुन्य मारग चलावते।।
राम नाम रूप धाम लीला गुन आठो याम
खलक तमाम यही काम में लगावते।
खोरि-खोरि ग्राम-ग्राम धाम-धाम राम-राम
कौनहू कलाम बिना राम नहीं पावते।। 7।।

सेष बहु बदन गनेस गज बदन
महेस पंच बदन न बेस जोग जन्य हैं।
अज मुख चारि चतुरानन प्रपंच करि
सनक सुचारि ध्यान धारि अग्रगन्य हैं।।
अपर महान भक्ति ज्ञान के निधान तेऊ
ना फबै समान जे महान महामन्य हैं।
सगुन सुजान सबै भाँतिन सुधन्य सुखी
युगल अनन्य जू से युगल अनन्य हैं।। 8 ।।

आनन अनेक एक-एक प्रान धारिन के
एक-एक आनन में जीभ कोटि सरसाय।
एक-एक जीभन पै कोटि रूप धारन कै
आनन हजारन कै बैठे सारदा सुभाय।।
सुनिये कृपानिधान युगल अनन्य भान
कोटिन जुगान करैं गान आन बिसराय।
रावरी रसज्ञताई विज्ञता विवेकताई
विद्या बुद्धि सीलताई सुद्धता न गाय जाय।। 9 ।।

दोहा

अष्टक युगल अनन्य को, परम सुमंगल रूप।
पढ़े सुने तेहि चित चढ़ै, युगल अनन्य अनूप।।

द्वितीय अष्टक

हरि गीतिका छन्द

अति सुखद रूप अनूप मुनिवर भूपवत राजत सदा।
रतिनाथ जित नित मद रहित सु सकल हितकारक सदा ।।
भव भरम नासन अडिग आसन भक्ति सासन दिनमनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी ।।1 ।।

पर्वत सिलावत द्रव्य जाको नागिनी सी नारि है।
सतमुख चतुर्मुख लोक सम्पति डाकिनी सी विचारि है।।
सब सिद्धि ठगिनी सी गिनत विष सम जगत माया बनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी ।। 2 ।।

अक्षोभ लोभ बिहीन हरिपद लीन नित्य अदीन हैं।
पर दीन जन के दुःख हारक अरि विदारक पीन हैं।।
सतसंग माँहि प्रवीन युक्ति नवीन कहहिं अतिहि घनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी ।।3 ।।

मन शान्त इन्द्रीजीत आप अभीत नीतिहिं नहिं तजैं।
सब संत माहि सुविदित जन पर प्रीति रीति सदा भजैं।।
अविपक्ष दक्ष सुलक्ष जो प्रत्यक्ष दिन अरु जामिनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी ।। 4 ।।

भवपूर जलनिधि भूरि ते काढ़त निकट करि दूर हैं।
तम-पुञ्ज नासन सूरवत सब बिस्व में भरपूर हैं।

यह हैं वसिष्ठमुनी किधौं अवतार और लियो पुनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी।। 5।।

यह काल अति विकराल लखि जम जाल ते जो छुड़ावने।
प्रतिपालने यह तन धर्‌यो किधौं धर्‌यो भक्त उधारने।।
जो तेजवान पुमान सो भी अंस हरि को कहि गुनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी।। 6।।

अभिमान मान न जानहीं जेहि कीर्ति लोग बखानहीं।
रघुनाथ साथ अनन्य भाव अखंड मन में आनहीं।।
उपमेय रिषिगन पूर्व में उपमान मानत अब जनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी।। 7।।

केते कहौं मुख एक ते गुन बहुत अवगुन नाहि हैं।
दर्शन करत अघ करत दूरि निज धर्ममय तन जाहि हैं।।
नित ध्यान तिन को धरो हित सो करो सुस्तव मुख भनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी।। 8।।

रसाचार्य प्रवर्य्याय लक्ष्मणदुर्ग वासिने।
श्रीमद्‌युगलानन्याय नित्यं भूयात् सुमंगलम्।।
त्याग वैराग्य रूपाय ज्ञानविज्ञान मूर्त्तये।
युग्म भाव प्रसक्ताय नित्यं भूयात् सुमंगलम्।।

इति श्री युगलाष्टकम्

श्री युगलानन्यशरण जी की

जन्मोत्सव बधाई

प्रकट कालीन स्तुति

श्रीगुरु प्रगटाने छवि रस साने लखि माता सुख फूली।
सद चिद मुद मूला जन अनुकूला उपमा अपर न तूली।।
रवि ससि सदजोती अगिन समोती जगमग किरण पसारी।
नख सिख लों सुन्दर रूप मनोहर मन भावन सुखकारी।।
जन कुलहि सु मंडन खल कुल खंडन कारक मंत्र प्रचारी।
अति दीन उबारन भवनिधि तारन बिनु कारन उपकारी।।
तिहुँ तनहिं सुनाशक भाव प्रकाशक तुरिया तन अविनाशी।
त्रय रहस अकासा मन वच पारा अर्थ अलौकिक रासी।
कलि कलुष निवासी प्रेम प्रकासी सुख कारन दुखहारी।
प्रभु इच्छाचारी स्वबस बिहारी जग जीवन प्रियकारी।।
रक्षक श्रुति सेतुं सतकुल केतुं वन्दित सदा अमानम्।
निगमादि सुगीतं चरित पुनीतं भवभय शमन निदानम्।।
सेवित वर चरणं आश्रम वरणं शरनद कृपा निधानम्।
आश्रित सब लायक तद्गुण छायक प्रेम भक्ति वरदानम्।।

यह चरित जो गावहि सब सुख पावहि 'प्रेममोद' मन भावै।
पिय पुर चलि जावै बहुरि न आवै रूप समीप रहावै।।

दोहा

अघ घालक गो संत द्विज, पालक कृपा अगार।
बालक बपु रोवन लगे, मंगल मोद प्रचार।।

पद – 2

आज महा मंगल रसिकन घर आनन्द उर उमगायो।।
बरषगाँठ रसिकाचारज की उत्सव साज सजायो।।
कातिक मास पुनीत सीत पख तिथि सतमी मन भायो।।
नखत लगन ग्रह बार मुहूरत शुभद योग जुरि आयो।।
ईशरामपुर पावन द्विज कुल जनमि जगत जस छायो।
हेमलता सिय सखि धरि नरतन युगल अनन्य कहायो।।
रसिक राज शिरताज अवध में अचल सुवास सजायो।
रसिक पीठ वर थापि लखन को किला सु नाम धरायो।।
ग्रंथ रतन वर विरचि शताधिक एक ते एक सवायो।
ज्ञान बलित वैराग भगति की, वेनी ललित बहायो।।
मधुर मंजु माला रचि-रचि कै रसिकन गर पहिरायो।
युगल विनोद विलास लखावन रहस सु ग्रन्थ रचायो।।
निष्ठा नाम रटन लय लावन ग्रंथन विरचि दृढ़ायो।।

को कहि सकै एक मुख इनके गुन अनन्त सरसायो।
मधुर भगति वरदान लहन को उत्सव 'कान्ति' मनायो।।

सोहर पद -3

हेमलता गुन आगरि रूप उजागरि हो।
ललना, प्रीनन परम प्रबीन ललन नवनागरि हो।।
सिय आयसु धरि सीस जीव जगतारन हो।।
ललना, प्रगट भये भुवि लोक भगति विस्तारन हो।
कातिक मास पुनीत पाख सित सातहिं हो।
ललना, लगन नखत शुभ योग बनेउ सब भाँतिहिं हो।।
रसिकन हिय उमगावन पंथ लखावन हो।
ललना, आचारज जग जनमि सुजन मन भावन हो।।
कबहुँ घृताची कुंड चित्र कल कूटहिं हो।
ललना, नाम रटेउ भरि जनम अवध सुख लूटहिं हो।।
युगल अनन्य सुशरन नाम बड़ पायउ हो।
ललना, धाम अवध सजि वास युगल जस गायउ हो।।
रसाचार्य अस पाइ सुभाग मनावहिं हो।
ललना, कान्तिलता भरि मोद सुयश कल गावहिं हो।।

पद - 4

चलो सखि सोहिलो गावैं। मधुर आनन्द रस पावैं।।
बरस की गाँठ गुरुवर की। युगल सु अनन्य धुर धर की।।
मास यह कल्प कातिक को। नखत चातक के स्यातिक को।।
पक्ष है शुक्ल सोहन को। तिथी सतमी विमोहन को।।
अवध आनन्द अधिकाने। सु उत्सव रसिक गुरु ठाने।।
रसाचारज जनम दिन को। लहै सुख भाग है जिनको।।
बढ़ैं अभिमान आचारज। लहै रस पंथ तब आरज।
बधाई गान करि नाचै। मधुर रस कान्ति मुद माचै।।

पद - 5

दिवस यह परम सुहावन री।
ईशरामपुर विप्र भवन में बजत बधावन री।।
मंगल कातिक मास पक्ष सित, शुभ सतमी को उदित-
मुदित हित विप्र बधू जायो सुत अद्‌भुत, सुख उपजावन री।।
विप्र भवन में मंगल माचैं, सुघर सुआसिनी गावैं नाचैं,
दिव्यानन्द नकल दिसि माचैं, हिय सरसावन री।।
सुनि सिसु जनम प्रीति अति बाढ़ी, ढाढ़िन युत चलि आयो-
ढाढ़ी, गान करन लागे सप्रेम कल कीरति पावन री।
जनम-कुंडली आगम भावैं, गनक शोधि कै जो गुनि राखैं।।
होइहहिं रसिकाचार्य शिरोमनि तत्त्व लखावन री।

सुनि-सुनि मातु पिता सुख फूलैं, जगत अमंगल मिटैं समूलैं।
आचारज भनि जनम कांति हिय रस उमगावत री।।

पद - 6

चलो री सब देखि आवैं बाजत बधैया।
ईशरामपुर घर-घर मंगल आनन्द रस उमगैया।
रसिकाचारज प्रगट भयो है मनहु सुजन सुर गैया।। 1।।
कातिक मास सुहावन पावन शुक्ल पक्ष सित छैया।
सतमी तिथि को जनम लियो है रसिक जनन सुखदैया।। 2।।
पुन्य ग्राम की सुघर सुआसिनि मंगल साज सजैया।
द्विज आँगन में नाचहिं गावहिं सोहर ता-ता-थैया।। 3।।
नभ सुर पुर द्वारन पर बाजै जंत्र विविध सहनैया।
आचारज के जन्मोत्सव सुख कान्ति मोद मगनैया।। 4।।

पद - 7

श्रवन सुखदाई बजत बधाई।
ईशरामपुर नागरि सुनि-सुनि पुलकि बधावन लाई।
मंगल घट पूजन बहु माला बन्दनवार बँधाई।
अच्छत रोरी पान सुपारी धूप अरु दीप मिठाई।।
स्वस्ति वचन सानन्द विप्र कहि गनपति गौरि पुजाई।
कुलाचार व्यवहार सविधि कर परिजन जन हरषाई।।
सब मिलि राग सोहिलो गावैं नाचैं द्विज अँगनाई।
राई लोन उतारति 'मधुरी' नटकट नजर बराई।

पद – 8

माई विशद बधाई लाई।
विधि लोचन लाभ लखाई।।
हेमलता श्रीसिया सहचरी कली भली विकसाई।
लोग लुगाई ईशरामपुर फूली सुख न समाई।।
देत निछावर द्विज मनभाई वसन सु द्रव्य लुटाई।
सियवल्लभ को होय दुलारी देत अशीष अघाई।
'मधुरी' प्रेमा परा प्रवर्द्धक प्रेम प्रीति पद पाई।।

पद – 9

जयति–जयति हेमलते रसिक रंजनी।
रसिकाचारज अनूप, संतत थिक निज स्वरूप,
ज्ञानवर विराग मधुर, भक्ति कंदनी।।
नाम अमित पान करत, युग बिहार भाव भरत,
जन मन कलि-कलुष मोह, सतत भंजनी।
सरजू तट बास सजत, जगत जाल सहज तजत,
धाम सुरस छाकि भये, जगत वंदनी।।
कथनी करनी अमोल, जनमन बिनु बिकत मोल,
आश्रित बलिहार होत, सुचित चंदनी।
गुरुवर पद कमल ध्यान, धरत हरत मोह मान,
गौरव आचार्य कांति, मल निकंदनी।।

परिशिष्ट

पद – 1

आजु पुर प्रगटे हैं रघुराज।
आनन्द भयो अखिल भुवननि में निर्तत देव समाज।।
नरपति सफल भये द्रुम देखियत पय घृत सरिता बाढ़ी।
त्रिविध प्रकार समीर संचर्‌यो अष्टसिद्धि द्वारे ठाढ़ी।।
मंगलचार बधाई घर–घर वेद घोष जय बोलत।
दधि अरु दूब बँधावत नृप कौ मुदित भये मुनि डोलत।।
कहैं परस्पर तत्त्व – वेत्ता पुन्य पुराकृत पायो।
दितिसुत काल दयाल अदितिसुत सो दशरथ गृह आयो।।
अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष गति जो जाचे सोंई पावत।
'अग्रअली' अनुराग सहित अति रामजन्म गुन गावत।।

पद – 2

गावो री हिलि मिलि नागरिया।
रामलला को जन्म सोहिलो रहसि–रहसि गुन आगरिया।।
लेउँ बधाई जो मन भाई महरानी संग झागरिया।
भूषण बसन बाजि गज बाहन दशस्यन्दन शिर पागरिया।।
झुण्ड–झुण्ड गायक गुण रमनी गजगमनी छवि सागरिया।
'ज्ञानाअलि' गर्बीली नागरि मन्द–मन्द गति बागरिया।।

पद – 3

आज नृपति उर सुख न समाई।
रूप अूप देखि सुत सुन्दर जन्म दरिद्र मनहुँ निधि पाई।।
सिंह पौरि पर नौबति बाजै सरस राग बाजै सहनाई।
बन्दनवार पताका जहँ–तहँ गजमोतिन की चौक पुराई।।
अलिगन गान करैं पंचम स्वर सुनत कोकिला कण्ठ लजाई।
महल मध्य आनँद अति सरसत बरसत सुमन देव समुदाई।।
याचक पाय अघाय सराहत दै अशीष निज–निज गृह जाई।
'मधुरअली' लै गोद खेलावत मुदित मातु सुत कण्ठ लगाई।।

पद – 4

आजु दशरथ के आँगन भीर।
ये भू–भार उतारन कारन प्रगटे श्याम शरीर।। 1।।
फूले फिरत अयोध्यावासी गनत न त्यागतचीर।
परिरंभन हँसि देत परस्पर आनन्द नैनहिं नीर।। 2।।
त्रिदस नृपति रिषि व्यौम विमाननि देखत रह्यो न धीर।
त्रिभुवन नाथ दयालु दरस दै हरी सबनि की पीर।। 3।।
देत दान राख्यो न भूप कछु महा बड़े नग हीर।
भये निहाल 'सूर' सब जाचक जे जाँचे रघुबीर।। 4।।

पद – 5

आज अनूठी बजी बधाई।
देवलोक विधि लोक मगन जन नाचत गावत सुधि विसराई।।

को हम कहाँ लोक हम को हैं अस आनन्द कबहुँ नहिं पाई।
जस महराज कुमार जन्म सखि रसिकन हिये सुरस बरसाई।।

पद – 6

आई हौं सुनि सुख सोहिलो।
देखोंगी मुखचन्द लाल को बहुत दिनन मग जोहिलो।।
लाई हौं शिशु खेल खिलौना छवि छौना मन मोहिलो।
शुक सारिका मोर मुनियाँ बर हँस कबूतर कोइलो।।
लाख लखेरिनि राजमहल की वचन सुधा रस बोहिलो।
'ज्ञानाअली' कौशिल्या सुत यश सुमति सूत वर पोहिलो।।

पद – 7

आवो–आवो री बधाई गावो सोहनी।
बहुत बयस पर ऐस समै भई अली–भली भाँति सु जोहनी।।
श्याम महा सुखधाम राम अभिराम काम बहु पोहनी।
परमानन्द अवध वीथिन प्रति दस दिसि भरि रहि छोहनी।।
हिलत मिलत हिय खिलत कमल भल छवि रस भरि दृग दोहनी।
'युगल विहारिनि' मुदित असीसत ऐहैं प्रिय सिय मोहिनी।।

पद – 8

क्या अनूठी रस भरी सुनिये बधाई बज रही।
मोर घन शुक सारिका कल कोकिला भी लज रही।।
भाट–नट बहुरूपिये ढाढ़िन मजा ए मच रहीं।
नारियाँ रँग–रंग की पोशाक पहिरे नचि रहीं।।

अवध में हरतरफ मंगलमय कनातें खचि रहीं।
किसी को सुधि–बुधि नहीं उत्साह रँग मति रचि रहीं।।
दीजिये लुटवाय सर्वस आज जो कुछ सँचि रही।
'युग्म' दिल अन्दर हमारे शौक सम्पत्ति बचि रहीं।।

पद – 9

क्या मजा मुझको चखाती है, बधाई लाल की।
क्या करूँ तारीफ दरसाती है छवि वर बाल की।।
गावतीं गुनगन रँगी सखियाँ सजी सब आल की।
देती निछावर महा मनिगन आभरन दुति जाल की।।
हो रही बकशीश चारों तरफ घोड़ा पालकी।
कौन कवि वर्णन करे पुरवासियाँ खुशहाल की।।
खुशी खातिर में समाती है नहीं नरपाल की।
'युग्म' जागी ज्योति सबहीं तौर मेरे भाल की।।

पद – 10

खेलावत आज नृप श्रीराम शिशु को लैके निज कनियाँ।
बनै सो निरखते ही सुभग अनुपम अमित छवि बनियाँ।।
दुहूँ काँधे से पदनख जोति ऐसी जगमाती है।
प्रगट जनु अर्ध शशि दस साथ उदयाचल से सुखदनियाँ।।
कनक पद पैजनी कटि किंकिणी कर शुभ कड़े भुजवर।
रतनमय पदक हरिनख युत लसै कलकण्ठ गजमनियाँ।।

शरद शशिपूर्ण मुख मसिबिन्दु माथे बाल घुँघरारे।
श्रवण कुण्डल दृगन अंजन है नासा ललित लटकनियाँ।।
तड़ित पट पीत केहरि कटि में काछी काछनी सुन्दर।
झिंगुलिया झीन जरतारी दिये शिर लाल चौतनियाँ।।
कबहुँ भूपाल काँधे पर खड़े कर देते हैं अपने।
उछलते नाचते हलते हैं लै-लै कलित किलकनियाँ।।
जननि चुचुकारि निज चुटकी बजाकर जब बोलाती हैं।
तो 'हरिजन' मन को हर लेती हैं हरि की मन्द मुसकनियाँ।।

पद - 11

दोहा- घर-घर अवध बधावने, मंगल साज समाज।
सगुन सोहावन मुदित मन, कर सब निज-निज काज।।
छन्द- निज काज सजत सँवारि पुर नर-नारि रचना अनगनी।
गृह अजिर अटनि बजार वीथिन्ह चारु चौकें विधि घनी।।
चामर पताक वितान तोरन कलस दीपावलि बनी।
सुख सुकृत सोभामय पुरी विधि सुमति जननी जनु जनी।। 1।।
दोहा- चैत चतुरदसि चाँदनी, अमल उदित निसिराज।
उडुगन अवलि प्रकासहीं उमगत आनन्द आज।।
छन्द- आनन्द उमगत आज विबुध विमान विपुल बनाइकै।
गावत बजावत नटत हरषत सुमन बरसत आइकै।।
नर निरखि नभ सुर पेखि पुर छबि परसपर सचु पाइकै।
रघुराज साज सराहि लोचन लाहु लेत अघाइकै।। 2।।

दोहा– जागिय राम छठी सजनि, रजनी रुचिर निहारि।
मंगल मूरति मोद मय, नृप के बालक चारि।।
छन्द– मूरति मनोहर चारि विरचि विरंचि परमारथमई।
अनुरूप भूपति जानि पूजन जोग विधि संकर दई।।
तिन्हकी छठी मंजुल मठी जग सरस जिन्हकी सरसई।
किए नींद भामिनि जागरन अभिरामिनी जामिनि भई।। 3 ।।

दोहा– सेवक सजग भये समय, साधन सचिव सुजान।
मुनिवर सिखये लौकिकौ बैदिक विविध विधान।।
छन्द– बैदिक विधान अनेक लौकिक्क आचरत सुनि जानि कै।
बलिदान पूजा मूल कामिनि साधि राखी आनिकै।।
जे देव देबी सेइयत हित लागि चित सनमानिकै।
ते जंत्र–मंत्र सिखाइ राखत सबनि सों पहिचानिकै।। 4 ।।

दोहा– सकल सुआसिनि गुरजन, पुरजन पाहुन लोग।
विबुध बिलासिनि सुर मुनि, जाचक जो जेहि जोग।।
छन्द– जेहि जोग जे तेहि भाँति ते पहिराइ परिपूरन किये।
जय कहत देत असीस तुलसीदास ज्यों हुलसत हिये।।
ज्यों आजु कालिहु परहुँ जागन होहिंगे नेवते दिये।
ते धन्य पुन्य पयोधि जे तेहि समै सुख जीवन जिये।। 5 ।।

दोहा– भूप त भाग सुरवर बली, नाग सराहि सिहाहिं।
तिय बर वेष अली रमा, सिधि अनिमादि कमाहिं।।

छन्द– अनिमादि सारद सैलनन्दिनि बाल लालहिं पालहीं।
भरि जनम ते पाए न जे परितोष उमा रमा लही।।
निज लोक बिसरे लोकपति घर की न चरचा चालहीं।
'तुलसी' तपत तिहुँ पाप जग जनु प्रभु छठी छाया लही।। 6।।

पद – 12

ढाढ़ी मिथिलापुर ते आयौ।
दशरथ नृप के पुत्र जनम सुनि, ढाढ़िन प्रेरि पठायो।। 1।।
दिव्य सभा देखी भूभुज की, चकाचौंधि सी लागी।
परम विनीत सुहृद सुचि सुखकर, सब मारग श्रम भागी ।। 2।।
निमि कै बंश विदेहन कौ जस, कौशलपति सुन्यौ कान।
कुश–शीरध्वज कुशल पूछि कै, बहुत कियौ सनमान।। 3।।
हय गय रथ भूषन पट दीने, राजवर्य वर दानि।
भोजन सींवर करी सुश्रूषा, बड़ी ठौर को जानि।। 4।।
बरषत विभव अयोध्यावासी, जैसे बरषत इन्द्र।
ढाढ़ी देखि पन्थ में पन्थी, मानी चल्यौ नरिन्द्र।। 5।।
'अग्र' अशीष चिरंजिव रघुबर, युग–युग जस अघटी।
देख्यौं जनम ब्याह पुनि देखौं, ढाढ़ी ठटनि ठटी।। 6।।

पद – 13

देखौ द्वार आजु दशरथ को, कहत न कछु कहि आवै री।
मूरतिवन्त मुकुति सिधि उझकत, भीतर जात लजावै री।।

मनिमय अजिर अनूप अधिक छवि, तहँ खेलत सुत चारी री।
कोटि भानु विधु कोटि काम दुति, अमित तेज तनुधारी री।।
घूँघरवारे केश वदन पर चञ्चल अधिक सुहाते री।
मनो मंदार तजत नहिं अलिकुल, मधु रस घूमत माते री।।
बरनौं कहा विशाल नयन अति, तिहि उपमा कछु नाहीं री।
इंदीवर पर उझकि परै छै, लोल मीन की नाईं री।।
उज्ज्वल भाल सचिक्कन ऊपर, श्याम चखौड़ा साज्यौ री।
रघुपति मुख पूरन शशि निरखत, तिमिर सकुचि मनो लाज्यौ री।।
अरुण अधर पर मुकुतावर सखि, नासा अग्र दई तौ री।
सकल लोक की शोभा हरि शुक, कमल कोष मनो बैठी री।।
कर्णफूल मणि जटित मनोहर, तर कपोल झलकाई री।
दिग जीतन कौ इन्द्र उदय लै, सविता उभय सुहाई री।।
बघनख कण्ठ विराजमान अति, उर पर सुभ्र निकाई री।
दुतिया चन्द अनन्द जनक जस, घन में देत दिखाई री।।
अरुन पीत सित हरित करधनी, श्याम सुभग कटि सोहैं री।
जलद घटा पर मनहुँ प्रगट भयौ, इन्द्र धनुष मन मोहैं री।।
कौशल्या की कोख कल्पतरु, रामचन्द्र फल लाग्यौ री।
पुनि प्रभाव ते अगम अगोचर, कौन सुकृत यह जाग्यौ री।।
ब्रह्मा शेष महेश शारदा, निज सरूप नहिं जानैं री।
ताके गुण 'अलि अग्रदास' कछु मति अनुमान बखानै री।।

पद – 14

देखिये आज क्या छटी की छटा छाई है।
जाग है हो रही घर–घर में मनोहर सजनी।।
खुश लसौ रंग की रजनी सु ललित भाई है।
गावतीं रानियाँ महलों के अटा पर प्यारी।।
रागिनी रूपवती वाम रहस गाई है।
भाल में रेख छठी राति को विधना ने लिखी।।
मिटि गई सहज हीं दिन आज युगल पाई है।।

पद – 15

धनि जननी जिन जायो री बालक, धनि जननी जिन जायो री।
श्यामल गौर मनोहर जोरी, चारि चतुर मन भायो री।। 1।।
आरति हरन करनि सुख मंगल, भरनि धरनि, प्रगटायो री।
अपनी भाग–भाग जग सिगरे, नृप सुत वेदन गायो री।। 2।।
ये अविनासी घट–घट वासी, कारण कारण आयो री।
फणि शंकर विधि मतिहुँ अगम तिन्ह रानिंन गोद खेलायो री।। 3।।
अवध नगर सुख अवधि बढ़ी अब, अवधि शाल गुन छायो री।
'कृपानिवास' विराट गुसाईं, सिसु तन लगत सुहायो री।। 4।।

पद – 16

धनि–धनि चैत महिनवाँ की सुघर समैया हो।
रामा प्रगट भये रघुरैया परम सुखदैया हो।। 1।।

धनि-धनि अवध नृपति वर प्रभु प्रगटावहिं हो।
रामा धनि-धनि अम्ब कौशल्या ई दिवस दिखावहिं हो।। 2।।

जो सुख दुर्लभ ब्रह्मा आदि सब देवहिं हो।
रामा, अवध नगर के बसैया सहजहि में पावहिं हो।। 3।।

द्वारे बाजे बधावा महल बिच सोहर हो।
रामा, सोभित रानीजू के गोद ललनजू मनोहर हो।। 4।।

आरति करहिं युवतिजन मंगल गावहिं हो।
रामा 'सियाअली' जीवन धन लखि सुख पावहिं हो।। 5।।

पद - 17

निज कर से पिय को कर गहि, ढाढिनियाँ सु छवि छकी।
श्री नृप सुवन जनम मंगल मुद देखत झझकि जकी।
नाना भाँति निछावर मनिगन तरफ न तनक तकी।
'युगल अनन्य' लाल उत्सव बिच अग जग नरद पकी।।

पद - 18

नृप द्वार दुन्दुभी बाजि रही।
रामजन्म सुनि के अजनन्दन, हिय में हर्ष न जात कही।।
भूषन वसन धेनु मणि मानिक, माँगै द्विज सोइ देत वही।
आनन्द अवध दकार है घर-घर, कहूँ नकार को खोज नहीं।।
अलिगन आय गाय क्या सोहिलो, सुनि रानिन सब मोद लही।
'मधुरअली' ब्रह्मादि देव सब, सुमन बरषि जो समय चही।।

पद – 19

प्रेम रस भीनी बधाई आज ही मैंने सुनी।
सुख सुधा परिपूरिनी मन मोहनी मन में गुनी।।
भूपमनि अनमोल गुनगन राय दशरथ सम दुनी।
कौन तीकों लोक में पाये सुवन त्रिभुवन धनी।।
गाइये अनुराग बिशद समेत जस कीरति घनी।
फिर नहीं ऐसा मोबारक समय सुख शोभा सनी।।
जेते जगत में थे भिखारी हो गये सो सब गनी।
'युग्म' निवछावर लला तुझको मिलेगी छवि छनी।।

पद – 20

बढ़ैया पाल्यो मोर चकोरा।
दशरथ मन्दिर जन्म कुँवर को सबहुन के चित चोरा।
सुनरा छवि सोना के हाथी अरु अद्भुत इक घोरा।।
माली बन्दनवार ले आयो बिच–बिच राखे छोरा।।
सूजी सुबास वारे सुन्दर पोइ पाट के डोरी।
लाखी लायो लाख की लटकन मनो कंचन के तोरी।।
कुम्हरा कल कलशा लै आयो परत सबन मन भोरी।
दई विदा नृप बहु आनन्द भरि दिन–दिन कोरिन तोरी।।
दै आसीस चले 'जनगोविन्द' अब अपने गृह जोरी।
चिरजीवो नृप कुँवर सलोने गौर स्याम द्वै जोरी।।

पद – 21

फूले फिरत अयोध्यावासी

सुन्दर सुत जायो कौशिल्या, रामचन्द सुख रासी ।।
घर–घर बन्दनमाल साथियाँ, मोतिन चौक पुराये ।
नाचत गावत देत बधाई, मनो घर–घर सुत जाये ।।
गरी–गरी गज बाजि जहाँ तहँ, हलकन दिये तबेले ।
दान बहुत याचकगन थोरे, कापै जात सकेले ।।
दशरथ भूप भण्डार मूक किये, बन्दी अभर भरे ।
सकट सली तोहि सोहू मालिनि ढोय–ढोय ढेर धरे ।।
सन्त कमल सुखदेन काज रवि, राघव उदय कर्‌यौ ।
मुदित देव दुन्दुभी बजावत, निशिचर तिमिर हर्‌यौ ।।
देत अशीश नगर नारी नर, चिरजीवो रघुबीर ।
'अग्रअली' आनन्द अखिलपुर, मिटी ताप तन पीर ।।

पद – 22

बधाई अवधेश के धामैं । बजाती गावती वामैं ।।
नगर की नारियाँ वृन्दैं, लजावैं दुति सरद चन्दै ।।
चली गति करन गज मन्दै । लिए दधि दूब अरविन्दै ।।
ललन मुख निरखि सुखकन्दै । सुफल निज जानि पद बन्दै ।।
निछावरि करत तन–मन–धन । गगन बरषै सुमन सुरगन ।।
नचैं कमला–शिवा बानी । लखै प्रिय वदन मुद दानी ।।
रसिक मन मीन भा पीना । श्याम छवि सिन्धु विधि दीना ।।

मिटी अब पाँच की आँचैं। मिल्यो महबूब वर साँचै।।
'जुगलसुविहारिनी' जाँचे। बरद वर भक्ति लहि नाचैं।।

पद – 23

बधाई प्यारी बाजै आज।
सुनत श्रवन सुख सरस सौगुनो सुमन सुमति तरताज।
पुर घर बन बीथी बिच जहँ–तहँ हुलसि रह्यो रसराज।।
रसिक सनेह सुधा साने मनु मधुकर रस सुख साज।।
नृप रानिन उत्साह चाह चय अकथ गिरा गनराज।
'युगल अनन्य' विपुल जाचकगन करैं कुतूहल छाज।।

पद – 24

बाजती वर विशद बधाई।
सुनत श्रवण सुख सरस परसमनि मनो रंक अति पाई।।
श्री दशस्यन्दन सुकृत सुतरु फल अमल प्रगट भए आई।
पुर घर–घर मुद मोद उदय उर रंग बूँद्र बरषाई।।
परम प्रकाश हुलास चराचर प्रीति दमक दरसाई।
'युगलअनन्यशरण' सब उर अनुराग चमक चमकाई।।

पद – 25

बाजे अवध नृप द्वार, बधाई शुभ घरी।
घर–घर मंगलचार, निछावरि मन झरी।।
छं.– मणि वसन भूषण बारि तन-मन नारि नर आनन्द महा।
बरषहिं सुमन सुर सूत मागध भाट नट गायक जहाँ।।